thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 08 जून 2014

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 08 जून 2014 से 14 जून 2014

ज्ये. शु. 10 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 111, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. इंटरनैशनल (अमृतसर) द्वारा आर्य समाज लोहगढ़ में हुआ यज्ञ का आयोजन

डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल द्वारा आर्य समाज लोहगढ़, अमृतसर में नवीन हवन यज्ञ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन डॉ. पी.पी. लखनपाल, विद्यालय के प्रबन्धक एवं आर्य समाज लोहगढ़ के प्रधान डॉ. के एन. कौल मुख्य यजमान थे। प्रिंसीपल अजय बेरी, कोषाध्यक्ष आर्य समाज लोहगढ़ भी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे।

प्रिंसीपल अंजना गुप्ता ने सभी का स्वागत किया और अपने संभाषण द्वारा हवन की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वर्तमान जीवन शैली हमें प्रकृति से दूर कर रही है। हम अपनी संस्कृति को भूल रहें हैं। नियमित हवन का आयोजन हमें प्रकृति से भी जोड़ता है और अपनी समृद्ध संस्कृति से भी।

विद्यालय के चेयरमैन डॉ. वी. पी लखनपाल ने उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वेद हमारी संस्कृति का आधार हैं। वैश्वीकरण के इस युग में युवा पीढ़ी अपने जीवन मूल्यों को भूल रही है। आर्य समाज की शिक्षाएं उन्हें अपने मूल की ओर लौटने की प्रेरणा देती हैं।

प्रिंसीपल डॉ. के.एन. कौल उपस्थित जनों को इस मंगल अवसर में भाग लेने पर आभार व्यक्त किया। उन्होंने वेदों की महत्ता पर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों को को इनसे जुड़ने की प्रेरणा दी।

आर्य समाज लोहगढ़ में निशुल्क डाईट कैंप का भी आयोजन किया गया। जिसमें सुप्रसिद्ध डाईटीशिन डॉ. रिचा खेसला ने लोगों को पौष्टिक और नियमबद्ध आहार की जानकारी निःशुल्क दी।

इस अवसर पर विद्यालय के उन छात्र–छात्राओं को विशेष रूप से सम्मानित किया गया जिनके जन्म दिन मई के महीने में आते है।

इस पावन हवन यज्ञ के आयोजन के अवसर पर स्थानीय डी.ए.वी. प्रबन्धक समिति के माननीय सदस्य श्री जे.के. लूथरा, श्री सुदर्शन कपूर एडवोकेट श्रीमती नीलम खन्ना, आर्य समाज के श्री अतुल, श्री दिनेश प्रिं संजीव कोछड़, प्रिंसीपल परमजीत कुमार, प्रिंसीपल निशीत, हरगुण हस्पताल से डॉ. हरप्रीत कौर, विद्यालय के समस्त शिक्षकगण, विद्यार्थी व उनके अभिभावक भी उपस्थित थे।

वैदिक चिन्तक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को 'वेदश्री सम्मान'

अग्निहोत्र धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा 11वें स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस के अवसर पर वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के विशाल सभागार में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया (दिल्ली निवासी) को *'वेदश्री सम्मान'* से विभूषित किया गया। लगभग आठ सौ आर्यजनों से खचाखच भरे सभागार में मोतियों की माला, शाल, प्रशस्ति–पत्र युक्त महर्षि दयानन्द का चित्र, प्रतीक–चिह्न, ग्यारह हजार रुपये की सम्मान–राशि का चेक एवं ग्रंथादि स्वामी दिव्यानंद सरस्वती, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री वेदप्रकाश गुप्ता, ई प्रेम प्रकाश शर्मा आदि ने समवेत रूप से डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को भेंट कर उनका अभिनन्दन किया।

अत्यन्त विनम्र भाव से सम्मान को स्वीकार करते हुए डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान उनका न होकर उस ऋषि–परम्परा का है, महात्मा प्रभु आश्रित जी का, पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी का एवं उन अन्य गुरुजनों का है कि जिनका उनके जीवन–निर्माण में बहुत बड़ा हाथ है। इस अवसर पर उन्होंने ब्रह्मलीन स्वामी दीक्षानन्द जी के विलक्षण व्यक्तित्व, की चर्चा करते हुए उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनकी पावन स्मृति में मिले 'वेदश्री सम्मान' के लिए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया।

श्रद्धेय स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता, अनेक आर्य संन्यासियों की गरिमापूर्ण उपस्थिति, श्री योगराज अरोड़ा, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री दर्शन अग्निहोत्री आदि गणमान्य व्यक्तियों के सान्निध्य में यह प्रेरणा दिवस भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

कोटा में 'आओ यज्ञ करें' कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

आर्य समाज गायत्री विहार के तत्त्वावधान में आओ यज्ञ करें कार्यक्रम के अन्तर्गत हाड़ौती राठौर समाज छात्रावास दादाबाड़ी में देवयज्ञ का आयोजन किया गया। आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के पौरहित्य में आयोजित इस देवयज्ञ में राठौर समाज छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों ने वेदमंत्रों के उच्चारणपूर्वक आहुति प्रदान की।

इस अवसर पर यज्ञ की व्याख्या करते हुए वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र ने कहा कि यज्ञ में देवपूजा, संगतिकरण एवं दान तीनों का समावेश होता है।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आप युवा देश का भविष्य हैं सामाजिक परिवर्तन में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए आपका सम्पूर्ण ध्यान केवल मात्र अपने अध्ययन पर होना चाहिए। अपने माता–पिता के सपनों को साकार करें।

कार्यक्रम के संयोजक अरविन्द पाण्डेय ने बताया कि ''आओ यज्ञ करें''कार्यक्रम के अन्तर्गत अलग–अलग स्थानों, घरों समूहों, छात्रों आदि में यज्ञ का आयोजन पिछले सात माह से किया जा रहा है। इसके प्रति लोगों में काफी उत्साह है।

कार्यक्रम का संचालन राधावल्लभ राठौर ने किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 08 जून, 2014 से 14 जून, 2014

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति चिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अङ्ग**) हे, (**अमूर**) अमूढ़, (**चिकित्वः**) ज्ञानी, (**अग्ने**) परमेश्वर!, (**मूराः**) मूढ़, (**वयं**) हम, (**महित्वं**) महत्ता को, (**न**) नहीं [जान पाते]।, (**त्वं**) तू, (**वित्से**) जानता है। [हमारा], (**वव्रिः**) रूपवान् आत्मा, (**शये**) सोया पड़ा है, (**जिह्वया**) जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, (**अदन्**) भोग करता हुआ, (**चरति**) विचरता है, (**विश्पतिः सन्**) राजा होता हुआ [भी], (**युवतिं**) प्रकृति–रूप युवति को, (**रेरिह्यते**) अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनाया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

दो रास्ते

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने कहा कि अमेरिका का हाल उन्होंने इसलिये सुनाया कि श्रोता 'प्रेय' मार्ग पर चलने का परिणाम देख सकें। 'न्यूर्याक टाइम्स' पत्र के हवाले से अमेरिका में बढ़ रही बीमारियों, और आत्महत्याओं में हो रही वृद्धि का कारण 'प्रेय' मार्ग बताया। अमेरिका में नास्तिकों की गिनती में दवाइयों पर होने वाले खर्च में तथा भ्रष्टाचार में जो वृद्धि हुई उसका कारण यही है कि देश गलत मार्ग पर चल पड़ा। स्वामी जी ने कहा कि यह केवल अमेरिका का ही नहीं सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैण्ड, हांगकांग, फ़िलिपाइन, जापान आदि में भी यही हो रहा है। 1966 में 'रीडर्स डाइजैस्ट' में अमेरिका के संबन्ध में जो भविष्यवाणी की थी वह आज सच्ची नज़र आ रही है।

कठोपनिषद् कहता है कि ''प्रेय मार्ग'' विनाश का रास्ता है। जो बुद्धिहीन हैं, मूर्ख हैं वे इस मार्ग को अपनाते हैं। बुद्धिमान् सोच समझ वाले, धैर्य वाले लोग ''प्रेय मार्ग'' को नहीं 'श्रेय मार्ग' को अपनाते हैं। 'प्रेय मार्ग' पर चलने वाले रावण, कंस, दुर्योधन, शिशुपाल, शकुनि और जरासंध जैसे अनेकों लोगों द्वारा अनुभूत पराजय, अपमान आदि का जिक्र करके स्वामी जी ने कहा कि जिसका परिणाम बुरा है यह रास्ता अच्छा नहीं

अब आगे....

याद रखो ! विज्ञान पढ़ लेने से, इतिहास पढ़ लेने से या दूसरी पुस्तकें पढ़ लेने से मनुष्य बुद्धिमान् नहीं हो जाता। गीता को पढ़ लिया, कण्ठस्थ भी कर लिया, उसपर आचरण नहीं किया तो गीता के पढ़ने का लाभ क्या हुआ ? रावण भी तो चारों वेदों का पण्डित था, चारों वेदों को जानने वाला था, लेकिन चल पड़ा गलत रास्ते पर।

छान्दोग्य उपनिषद् में इन्द्र और विरोचन की कथा आती है। प्रजापति ने एक बार घोषणा की कि "आत्मा पाप से बचा हुआ है।, अजर है, अमर है। जिसे कोई दुःख नहीं, कोई प्यास नहीं, जो सत्यकाम और सत्यसंकल्प है, वही जानने के योग्य है। जो इस आत्मा को साक्षात् जानता है, उसको सभी लोक मिल जाते हैं, सभी इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं।"

यह घोषणा देवताओं ने भी सुनी और राक्षसों ने भी।

देवताओं ने अपनी सभा की, और निर्णय किया की आत्मा को जानना चाहिए। इन्द्र को उन्होंने अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा कि वह प्रजापति से पूछकर आए कि आत्मा क्या है ?

राक्षसों ने भी अपनी सभा में निर्णय किया कि इस आत्मा को जानना चाहिए। विरोचन को उन्होंने प्रतिनिधि निश्चित किया और उसे प्रजापति के पास भेज दिया।

इन्द्र और विरोचन दोनों प्रजापति के पास पहुँचे।

प्रजापति ने पूछा – "क्या चाहते हो तुम ?"

दोनों ने कहा – "हम एक प्रश्न पूछने आए हैं।"

प्रजापति बोले – "प्रश्न पूछने आए हो तो 32 वर्ष तक ब्रह्मचारी बनकर मेरे आश्रम में रहो, इसके पश्चात् पूछना।"

यह पुराने समय की बात है। आज कोई नवयुवक मेरे पास आए, आत्मा की बात पूछे और मैं कहूँ कि "पाँच वर्ष तक ब्रह्मचारी रहो" तो वह कहेगा, "अपने घर में रखो अपना आत्मा, मेरे पास इतना समय नहीं।" आजकल तो झटपट का युग है। बटन दबाओ और सबकुछ हो जाए। बत्ती प्रकाश देने लगे, हीटर गर्मी देने लगे, रेडियो गाने लगे, टैलीविज़न पर चित्र बोलने लगें, हीटर गर्मी देना आरम्भ कर दे, लिफ्ट ऊपर जाने दे। बस, बटन दबाओ और सब–कुछ हो जाय। लोग चाहते हैं कि आत्मा का दर्शन भी बटन दबाने से हो जाय। होता है बटन दबाने से दर्शन, परन्तु उस समय होता है जब बत्ती, पंखे, रेडियो, हीटर, टैलीविज़न और लिफ्ट से लगी तार का जिस प्रकार पॉवर–हाउस के साथ के कनैक्शन है, इसी प्रकार आपके मन का सम्बन्ध पॉवर–हाउसों के पार, परम पिता परमात्मा से जुड़ा हो। यह कनैक्शन जुड़ा हो नहीं और केवल बटन दबाते रहो, तो न बत्ती और पंखा आदि चलते हैं न आत्मा का दर्शन होता है।

thearyasamaj.org

परन्तु मैं इन्द्र और विरोचन की बात सुना रहा था।

दोनों ने प्रजापति के सामने सिर झुका दिया। 32 वर्ष तक ब्रह्मचारी बनकर उनके आश्रम की सेवा करते रहे। अन्त में प्रजापति ने कहा – "अब कहो ! तुम्हारा प्रश्न क्या है?"

इन्द्र और विरोचन दोनों बोले – "आपने जिस आत्मा के सम्बन्ध में घोषणा की, उसको हम जानना चाहते हैं, वह क्या है ?"

प्रजापति ने कहा – "जो यह आँख में देखा जाता है, जो समाधि में मन की आँख से देखा जाता है, वह आत्मा है। जो यह पानी के अन्दर और शीशे के अन्दर अक्स–(प्रतिबिम्ब)–रूप से दिखाई देता है, वह ही आत्मा है। तुम पानी का एक प्याला लाओ, देखो कि उसमें क्या दिखाई देता है।"

इन्द्र और विरोचन पानी से भरा एक–एक प्याला लाये। उसमें देखा।

प्रजापति ने पूछा – "क्या दिखाई दिया इसमें ?"

दोनों ने कहा – "इसमें पूरे–का–पूरा आत्मा दिखाई देता है, सिर से पाँव तक।"

प्रजापति बोले – "जाओ ! अब सुन्दर कपड़े, अच्छे–अच्छे भूषण पहनकर इसमें देखो।"

उन्होंने देखा।

प्रजापति बोले – "अब क्या दिखाई देता है ?"

इन्द्र और विरोचन ने कहा, "इसमें आत्मा दिखाई देता है। इसने सुन्दर कपड़े और भूषण पहन रखे हैं।"

प्रजापति बोले – "यही आत्मा है, यह अजर है, अमर है, शान्त है, इसके लिए कोई भय नहीं।"

दोनों यह समझकर चल पड़े कि शरीर ही आत्मा है।

विरोचन अपने साथियों के पास पहुँचा; बोला – "मैंने समझ लिया आत्मा को। यह शरीर ही आत्मा है। इसे खिलाओ–पिलाओ। इसे सुन्दर तथा बलवान् बनाओ। इसके लिए हर प्रकार के आराम पैदा करो, हर–प्रकार के खाने, हर–प्रकार की शराबें, हर प्रकार के कपड़े, भूषण, हीरे, मोती, जवाहरात। इसकी पूजा ही आत्मा की पूजा है। इसका दर्शन ही आत्मा का दर्शन है।"

परन्तु इन्द्र ने चलते–चलते सोचा – प्रजापति महाराज ने कहा था, यह आत्मा अजर, अमर, शान्त और निर्भय है। मैं यह समझकर चल पड़ा कि यह शरीर ही आत्मा है। परन्तु शरीर तो उत्पन्न भी होता है, बढ़ता भी है, इसको पीड़ा भी होती है, सर्दी और गर्मी भी लगती है, यह वृद्ध भी होता है, मरता भी है। फिर सह अजर, अमर और निर्भय कैसे हुआ। वास्तविकता को जानने के लिए प्रजापति के पास फिर जाना होगा। मैंने आत्मा को जाना नहीं। वे प्रजापति के पास पहुँचे तो प्रजापति बोले – "तुम तो विरोचन के साथ आत्मा को जानकर चले गए थे, वापस क्यों आ गए ?"

इन्द्र ने कहा – "महाराज ! शरीर को आत्मा समझने में मुझे कल्याण दिखाई नहीं देता। यह कपड़ों और भूषणों के बिना हो तो पानी में कपड़ों और भूषणों के बिना दिखाई देता है, कपड़ों और भूषणों के साथ हो तो इनके साथ दिखाई देता है। फिर यह अजर, अमर और निर्भय भी नहीं। मैं जानना चाहता हूँ कि आत्मा क्या है?"

प्रजापति मुस्कराते हुए बोले – "ठीक कहा तुमने। यह शरीर आत्मा नहीं, इसे आत्मा समझने में कल्याण भी नहीं है। परन्तु आत्मा क्या है, यह जानने के लिए तुझे 32 वर्ष तक और ब्रह्मचारी बनकर मेरे आश्रम में रहना होगा।"

इन्द्र ने सिर झुकाकर कहा – "ऐसा ही करूँगा।" और 32 वर्ष तक ब्रह्मचारी बनकर आश्रम की गौओं, उसमें रहनेवालों और वहाँ आनेवाले अतिथियों की सेवा करता रहा, और 32 वर्ष पश्चात् प्रजापति ने कहा – "यह जो शरीर के अन्दर से देखता है, जो शरीर के सो जाने पर भी स्वप्न देखता है, जो शरीर के अन्धा होने पर भी अन्धा नहीं होता, जो शरीर के अपाहिज होने पर भी अपाहिज नहीं होता, जो शरीर के समान एक स्थान पर कैद नहीं, जो शरीर के कैद होने पर भी सब जगह सब–कुछ देखता है, वह आत्मा है। वह शरीर नहीं, शरीर के अन्दर रहने वाला है। आँख नहीं, आँख के अन्दर से देखने वाला है। कान नहीं, कान के अन्दर से सुननेवाला है। नाक नहीं, नाक के अन्दर से सूँघनेवाला है। वह आत्मा है, वह अजर है, वह अमर और निर्भय है।"

इन्द्र ने यह उपदेश सुना और देवताओं के पास आया, उन्हें बताया कि आत्मा क्या है।

परन्तु विरोचन ने तो शरीर को ही आत्मा समझा; घोषणा की– "शरीर को सुखी रखना ही आत्मा को सुखी रखना है।"

और आज यह सारी दुनिया विरोचन के बताए रास्ते पर चली जाती है। शरीर को, इसके सुख और आराम को ही इसने सब कुछ समझ लिया है। इस बात को भुला दिया है कि यह शरीर केवल एक मकान है। मकान साफ–सुथरा और सुन्दर हो तो मकान में रहनेवाले को प्रसन्नता होती है अवश्य। परन्तु मकान को ही सँवारते, सजाते और सुन्दर बनाते रहो और इसमें रहनेवाले की ओर ध्यान न दो तो परिणाम क्या होगा ?

हमारे शास्त्रों ने मनुष्य–जीवन के चार लक्ष्य, चार आदर्श बताए – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। यह भी कहा कि इन चारों को प्राप्त करने के लिए शरीर की रक्षा ज़रूरी है, क्योंकि यह सब काम शरीर के द्वारा ही हो सकता हैं। इसलिए शरीर को स्वस्थ और बलवान् रखना चाहिए–

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।

"धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – चारों मंजिलों को प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि शरीर स्वस्थ हो।"

धर्म – बुद्धि के लिए,
अर्थ – शरीर के लिए,
काम – मन के लिए,
मोक्ष – आत्मा के लिए ।

ये चार मंज़िलें हैं। चारों उस दशा में प्राप्त होती हैं जब शरीर स्वस्थ हो, शरीर में शक्ति हो। शरीर बिगड़ जाय तो कुछ प्राप्त नही होता। जिस मोटर में बैठकर हमें किसी मंज़िल (लक्ष्य) तक पहुँचना है, वही खराब हो जाय तो लक्ष्य तक पहुँचने का सवाल ही पैदा नहीं होता। इसलिए आवश्यक है कि उस शरीर को ठीक दशा में रखो, दृढ़ और स्वस्थ रखो, इसकी रक्षा करो, इसको बलवान् बनाओ। यह ठीक रहता है तीने बातों से – ठीक प्रकार की खुराक (भोजन) से, आराम की नींद और ब्रह्मचर्य से। ठीक प्रकार का भोजन वह है जिससे शरीर के अन्दर सात्विक शक्ति पैदा हो। ठीक प्रकार की निद्रा वह है जिसमें कोई चिन्ता न हो, क्योंकि चिन्ता नाम की यह बीमारी बड़ी भयंकर है –

"चिन्ताज्वरो मनुष्याणां निद्रां क्षुधां तृषां हरेत्।"

जिसे चिन्ता की बीमारी लग जाती है उसे निद्रा तो एक ओर, भूख और प्यास भी नहीं लगती, और आज हमने अपने जीवन को चिन्ताओं से भर दिया है। परिणाम यह है कि आराम का हर सामान होने पर भी निद्रा नहीं आती। निद्रा कहती है, मेरे पास आना हो तो अकेले आओ, चिन्ताओं को परे कर दों, सब बातों को भूल जाओ और मेरी गोद में आ जाओ। हम सब–की–सब चिन्ताओं को साथ लेकर सोना चाहते हैं, तब निद्रा आएगी कैसे?

किसी की शबे–वस्ल सोते है कटती,
किसी की शबे–हिज्र रोते है कटती ।
हमारी यह शब कैसी शब है इलाही,
न सोते है कटती, न रोते है कटती ।।

ब्रह्मचर्य यह है कि जो कुछ खाया उसके सत्त्व को सँभाल के रखो। हम जो कुछ खाते हैं उससे रस बनता है, उससे रक्त बनता है, रक्त से चर्बी बनती है, चर्बी से हड्डी बनती है, हड्डी से मज्जा बनती है, मज्जा से वीर्य बनता है, वीर्य से ओज बनता है, इस ओज से मनुष्य का मुखमण्डल चमक उठता है, दिमाग चमक उठता है, यह ओज, आत्मा का भोजन है।

न वै तं चक्षुर्जहाति न प्राणो जरसः पुरा ।
पुरं या ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुषः उच्यते ।।

'जरा अवस्था से पहले उस मनुष्य की आँखें निर्बल नहीं होतीं, उसके प्राण उसका त्याग नहीं करते, जिसने ब्रह्मचर्य के रहस्य को जाना और उसपर आचरण किया है।'

और यह 'जरा अवस्था' क्या है ? आयुर्वेद के अनुसार मनुष्य उत्पन्न होता है तो तीन वर्ष तक शिशु अथवा बच्चा रहता है। तीन वर्ष से दस वर्ष तक बालक रहता है। दस से पचत्तर वर्ष तक जवान रहता है। पचत्तर वर्ष से एक सौ बीस वर्ष तक वृद्ध रहता है। इसके पश्चात् 'जरा' अवस्था आरम्भ होती है। परन्तु यह होता है इस शर्त के साथ कि आपने जीवन–भर शरीर की रक्षा की हो। शरीर की रक्षा बहुत जरूरी है।

मैं अफ्रीका जाने के लिए अमेरिका से लण्डन पहुँचा तो 'फ्लु' ने घेर लिया। बहुत दबाया उसने। दो दिन तो बिल्कुल बेहोश रहा। यह भी भूल गया कि मैं कौन हूँ, जिनके यहाँ ठहरा हूँ वह कौन है। साढ़े पाँच महीने में यूरोप, अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका में घूमकर जो प्रचार करता रहा, वह भी भूल गया। अन्त में होश आया, ज्वर कम हुआ। डॉक्टर ने कहा, "बहुत भाग्यवान हो तुम कि इतना भयंकर फ्लू होने के बाद भी बच गए, नहीं तो केवल लण्डन के अन्दर पिछले छः दिनों में चार हजार मनुष्य इस रोग से मर गए हैं। साठ वर्ष से ऊपर की आयु के जिस किसी आदमी को फ्लू हुआ, वह बचा ही नहीं। मुझे आश्चर्य है कि तुम कैसे बच गए ?"

मैनें हँसते हुए कहा – मेरी आयु तो साठ वर्ष से बहुत कम है। मैं तो केवल बीस वर्ष का हूँ।

डॉक्टर साहब आश्चर्य से बोले – "बीस वर्ष ? बीस वर्ष के कैसे हैं आप ?"

मैंने कहा – "मेरा नाम आनन्द स्वामी है। आनन्द स्वामी का जन्म बीस वर्ष पहले हुआ, जब मैंने संन्यास लिया। उससे पहले एक खुशहालचन्द था, परन्तु वह तो समाप्त हो चुका।"

डॉक्टर साहब मुस्कराते हुए बोले – "अब समझा ! परन्तु अभी आपको अफ्रीका जाने का विचार छोड़ना होगा, अभी आपका शरीर ऐसा है कि इसका इलाज होना चाहिए, इसे आराम मिलना चाहिए।"

मैं अफ्रीका का कार्यक्रम स्थगित करके लण्डन से बम्बई आया। वहाँ इस शरीर की मरमम्त कराता रहा। शरीर ठीक हुआ तो यहाँ आपके पास पहुँच गया। शरीर की रक्षा आवश्यक है, इसके बिना काम बनता नहीं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चारों को प्राप्त करने का साधन यह मनुष्य–शरीर है।

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

श्री कृष्ण चरित्र के प्रथम उद्धारकर्ता

महर्षि स्वामी दयानन्द या श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी

● प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

योगेश्वर श्रीकृष्ण महाभारत के उच्चतम पात्रों में गिने जाते हैं। उन्हें गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण (**यत्र** योगेश्वरः कृष्ण–अध्याय–18) कहा गया है। भीष्म पितामाह ने श्रीकृष्ण को **'वेद वेदांग तत्वज्ञः'** कहा है। स्वामी दयानन्द नेअपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्री कृष्ण चरित्र की बड़ी प्रशंसा की है। महाभारत में श्रीकृष्ण चरित्र को बहुत अच्छा बताया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रीकृष्ण योगेश्वर, नीति निपुण तथा महाभारत युद्ध में पाण्डव पक्ष के सफल नेता हैं। यदि श्रीकृष्ण पाण्डव पक्ष के नेता न होते तो पाण्डव पक्ष का क्या बनता, यह सहज अनुमानगम्य है।

पौराणिक काल में रासलीला आदि का कृष्ण चरित्र में मिश्रण किया गया। श्रीकृष्ण चरित्र के साथ गोपिकाओं का चीरहरण, राधा के साथ उनका प्रेम सम्बन्ध,कुब्जा दासी आदि की बड़ी अश्लील कथाएँ सब जोड़ दी गयीं। योगेश्वर श्रीकृष्ण महारसिया व्यभिचारी के रूप में चर्चा में आ गये और पौराणिक कथाओं में भागवत आदि पुराणों की कथाओं में श्रीकृष्ण का योगेश्वर रूप लुप्त को गया। श्रीकृष्ण के इस भ्रष्ट चरित्र का मुसलमान, ईसाईयों ने हिन्दू धर्म को बदनाम करने के लिये खूब उपयोग किया। हिन्दुओं का सिर लज्जा से झुक जाता था। वे पौराणिक कथाओं के आलोक में मुसलमान, ईसाईयों को कोई उत्तर नहीं दे पाते थे। कई हिन्दू तो इन अश्लीलताओं से लज्जित होकर धर्म परिवर्तन भी कर लेते थे।

19 वीं शताब्दी भारतवर्ष के इतिहास में नवजागरण की शताब्दी के रूप में आयी। सर्वप्रथम राजा राममोहन राय ने हिन्दुओं के कुछ निर्बल पक्षों पर विचार किया और ब्राह्म समाज की स्थापना की। विशेषरूप से सतीप्रथा आदि में सुधार का प्रयास किया (यह आज के हमारे विषय से बाहर है) राजाराम मोहन राय के लगभग 50 वर्ष पश्चात् महर्षि स्वामी दयानन्द का युग आता है, उन्होंने बहुमुखी सुधार का काम किया। स्वामी दयानन्द के कार्यक्षेत्र से धर्म, समाज, साहित्य, राजनीति कुछ भी अछूता न रह गया। उनका कार्य बहुमुखी या सर्वतोमुखी कार्य के रूप में सामने आया। उन्होंने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में योगेश्वर श्रीकृष्ण को अति उत्तम चरित्र का नीतिमान महापुरुष बताया। स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि श्रीकृष्ण का महाभारत में अतिनिर्मल, निर्दोष चरित्र मिलता है उन्होंने कभी कोई पाप नहीं किया। सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण 1874–75तथा द्वितीय संस्करण 1882–83का है। इससे पता चलता है कि स्वामी दयानन्द ने श्रीकृष्ण चरित्र को निर्मल, निर्दोष 1882–83 में ही सिद्ध कर दिया था।

श्रीकृष्ण चरित्र पर वन्देमातरम् के प्रसिद्ध गीतकार, उद्गाता बंकिम चन्द्र चटर्जी ने बहुत सुन्दर विचार किया है। श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी का जन्म 27 जून,1838 ई० को हुआ था और उनका देहान्त 8 अप्रैल 1894 ई० को हुआ। स्वामी दयानन्द का जन्म फरवरी 1825 ई० तथा मृत्यु दीपावली 1883 ई० है। किसी भी सूरत में स्वामी दयानन्द ने श्रीकृष्ण चरित्र के निर्मल उद्धार का काम ई० 1883 से पूर्व ही कर दिया था। श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी ने श्रीकृष्ण चरित्र पर जो पुस्तक लिखी वह 1886 ई० की है। हिन्दु धर्म एवं श्रीकृष्ण चरित्र के प्रति अश्रद्धेय चर्चा से खिन्न होकर बंकिम चन्द ने श्रीकृष्ण चरित्र भाग–1 सन् 1886 ई० और भाग–2 सन् 1892 ई० में प्रस्तुत किया। श्री बंकिम चन्द्र के श्रीकृष्ण चरित्र की चर्चा के सन्दर्भ में श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है–

"बंगदेश यदि निश्चेतन और प्राणहीन नहीं होता, तो श्रीकृष्ण चरित्र को लेकर आज के हिन्दू समाज तथा विकृत हिन्दू धर्म पर जो अस्त्राघात है उससे व्यथित तथा सचेतन हो उठता। बंकिम की भाँति तेजस्वी और प्रतिभा सम्पन्न और किसी व्यक्ति ने लोकाचार, देशाचार के विरोध में ऐसे निर्भीक तथा स्पष्ट उच्चारण में स्वमत प्रकाश का साहस नहीं दिखाया है। यहाँ तक कि बंकिम ने प्राचीन हिन्दूशास्त्र को ऐतिहासिक तर्क देकर जिस तरह से उसके सार और असार भागों को अलग किया है, उसके प्रामाणिक तथा अ–प्रामाणिक अंशों का विश्लेषण जिस तरह निःसंकोच चित से किया है, आज उसका सानी पाना कठिन है।"

इस विवेचना से यह नितान्त सुस्पष्ट हो जाता है कि स्वामी दयानन्द ने श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी से 3–4 वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण चरित्र की निर्दोषता को प्रमाणित एवं लिपिबद्ध कर दिया था।

ईशावास्यम्
पी– कालिन्दी
कोलकाता– 700089

चरित्र निर्माण शिविरों के माध्यम से हो सकते हैं बच्चे सद्गुण सम्पन्न

● पं. राम स्वरूप

चारित्रिक विकास

समस्त प्राणियों में मानव श्रेष्ठ प्राणी है। एकमात्र मानव ही है जो सारे प्राणियों का हित कर सकता है। सब तरफ की हरियाली, उपजाऊ मिट्टी और पेयजल इनको बढ़ा सकता है। बुद्धिमान होने के कारण मनुष्य मात्र का यह दायित्व है कि उसके द्वारा प्राणियों को हरियाली का और जड़ जगत् का सदुपयोग हो।

स्वभाव से हर मनुष्य अपने जीवन की सुरक्षा चाहता है, हरेक मानव अपनी माँ, बहन, घरवाली तथा बेटी के प्रति निश्चिन्त रहना चाहता है। इस निश्चिन्तता के लिए जो रीति बनेगी वह यह कि मनुष्य मात्र अपनी तरह से जो अपने पड़ोसी हैं उनकी सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील रहे। हर कार्य को इस तरीके से करे कि जिससे किसी का अहित नही हो। यूं कहें कि बालक–बालिका किशोर–किशोरी, युवक–युवती इनका व्यवहार इस प्रकार से हो कि ये एक–दूसरे की रक्षा करें। अथर्ववेद का मंत्र है–

''पुमान् पुमानसं परिपातु विश्वतः''

इसका अर्थ बनेगा– एक मानव दूजे मानव की रक्षा सब तरह से करे। किसी से डरे नहीं और इसी के साथ किसी को डरावे भी नहीं। वेद में इसके लिए एक अच्छा शब्द आता है

प्रत्येक मनुष्य यह चाहता है कोई उससे छल–कपट न करे। उसे किसी प्रकार का धोखा न दे, किसी जाल–साजी में न फसावे। यह तभी संभव है जब हम समस्त मानव जैसा मन में है वैसा अपने वचन से कहें। जो हमने मुंह से कहा उस प्रकार की सेवा अपने हाथों से करें तो यह सरलता जितनी सुलभ होगी उसके अनुपात में मनुष्यों में निश्चिन्तता होगी।

हर व्यक्ति या परिवार के पास पिछली पीढ़ियों से दी हुई या अपनी मेहनत से प्राप्त की हुई संपदा होती है, भवन होता है, भूमि होती है। सब एक–दूसरे के हक को बचावें। यह व्यवहार से **न्याय** है। कोई किसी का हक न छीने यह **मानवता** है। क्योंकि मानव सबसे अच्छा प्राणी है इसलिए उसके सारे कार्य कलाप इस रीति के हों कि नभचर, जलचर, थलचर इन सबको मनुष्य के द्वारा सुरक्षा मिले। भारत के ग्रंथ, वेद–पुराण, तिरक्कुल, जैन–आगम, बौद्धपिटक, गुरुग्रंथ आदि आदि सब एक स्वर से गौमाता को स्वीकारते हैं। इसी के साथ और जो पौपाये उनको सुरक्षित करें। सब तरह की हरियाली की जड़ कोई ने काटे। यह **दया** है तो दयालुता हरेक में हो। पुरुष स्त्रीका ऋणी है। स्त्री मातृ शक्ति है। वह मानव जाति को पुत्र और पुत्री दोनों देती है। पुरुष यह नही कर सकता। माता के रूप में स्त्री नारी–नर दानों को एक वर्ष अपने शरीर से पालन पोषण करती है पुरुष ऐसा नहीं कर सकता अतः नर का यह दायित्व है, कर्त्तव्य है कि वो सदा नारी का सम्मान ही करे। हर कार्य में हर एक नारी का सम्मान ही करे। हर कार्य में हर एक नारी के सम्मान को जितना संभव हो बढ़ावे। कार्यों से, वचन से और मन से भी मातृ शक्ति का आदर करे। ऐसा मनुष्य पवित्र है।

अपने देश की नई पीढ़ी को उसका उसे शिक्षक ही प्रोन्नत कर सकता है। बालक–बालिका हो, किशोर–किशोरी हो, प्राथमिक, माध्यमिक, स्नातकीय विद्यालय हो, अध्यापक, व्याख्याता, प्राध्यापक अथवा इन्हें जिस भी किसी अन्य नाम से बुलावें के वल ये ही हैं जो नई पीढी को सद्गुण सम्मत कर सकते हैं। विद्यालयों में लगने वाले चरित्र निर्माण शिविरों के माध्यम से यह महानुभाव छात्र–छात्राओं में सद्गुणों से सम्पन्न कर सकते हैं।

पर्यावरण सुख, 698, गोलाई
ग्राम और डाक–थाँवला
जिला नागौर – 305026

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

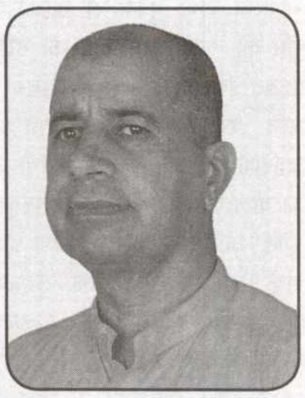

शंका–एक वाक्य लिखा है कि मेरी आत्मा नहीं मानती। यह वाक्य कौन कहता है–मेरी आत्मा नहीं मानती। इसका मतलब, मैं आत्मा से भी अलग चीज हूँ?

समाधान – प्रश्न यह उठाया है कि यह वाक्य बोला जाता है कि –'मेरी आत्मा नहीं मानती'। इससे फिर शंका पैदा होती है कि 'मैं आत्मा से भी कोई और अलग चीज हो गया। जैसे 'मेरा पेन', 'मेरा शरीर', ऐसे ही 'मेरी आत्मा'। इसका समाधान है–

मेरे हाथ में पेन है। मैं एक वाक्य बोलता हूँ– यह मेरा पेन है। इस वाक्य का अर्थ क्या हुआ? क्या मैं पेन हूँ या पेन से अलग हूँ?

उत्तर है – मैं पेन से अलग हूँ।

दूसरा वाक्य है – यह मेरी घड़ी है। तो क्या मैं घड़ी हूँ?

उत्तर है – नहीं, घड़ी से अलग हूँ।

ऐसे ही तीसरा वाक्य – यह मेरा हाथ है। क्या मैं हाथ हूँ?

उत्तर है – नहीं, हाथ से अलग हूँ।

ऐसे ही चौथा वाक्य – यह मेरा शरीर है। क्या मैं शरीर हूँ?

उत्तर है – नहीं, मैं शरीर से अलग हूँ।

तो मैं कौन हूँ? उत्तर है–मैं आत्मा हूँ।

जैसे यह मेरा पेन है, यह मेरी घड़ी है, यह मेरा हाथ है, यह मेरा शरीर है। चारों जगह पर 'मेरा' शब्द है। यह मेरा पेन है, मैं पेन से अलग हूँ। यह मेरी घड़ी है, मैं घड़ी से अलग हूँ। यह मेरा हाथ है, मैं हाथ से अलग हूँ, तो फिर शरीर से अलग रहने वाला मैं कौन हूँ? मैं आत्मा हूँ

यह जो शंका लिखी है कि मेरी आत्मा नहीं मानती, यह वाक्य गौण है। यह मुख्य कथन नहीं है। **अपने भाषा साहित्य में दो प्रकार के वाक्य होते हैं– एक मुख्य और दूसरे गौण।**

मुख्य–वाक्य का मतलब होता है, जिस वाक्य का सीधा–सीधा अर्थ लिया जाए और गौण–वाक्य का मतलब होता ह, जिसका सीधा अर्थ नहीं ले सकते। थोड़ा अर्थ बदल करके लेना पड़ता है। उसमें सीधा–सीधा अर्थ लागू नहीं होता। कैसे? **'जैसे लोहे के चने चबाना'** एक मुहावरा है। अब लोहे के चने मुँह में डाल के दाँत के नीचे चबाएंगे क्या? फिर भी यह एक प्रचलित मुहावरा है।

कुछ बोलचाल में ऐसे अजीब–अजीब शब्द होते हैं लेकिन उन वाक्यों का सीधा अर्थ नहीं लिया जात। आप लोग मुम्बई से रेलगाड़ी में बैठे। जब रेलगाड़ी अहमदाबाद पहुँच गई तो आपने क्या बोला, चलो–चलो उतरो, अहमदाबाद आ गया। क्या अहमदाबाद आ गया? अरे! अहमदाबाद तो वहीं खड़ा है। अहमदाबाद कहाँ चलकर आया? आप चल करके आए हैं अहमदाबाद। दिल्ली वाले भी अहमदाबाद आए, मुम्बई वाले भी अहमदाबाद आए। और बोलते क्या हैं कि उतरो–उतरो अहमदाबाद आ गया। वो तो वही खड़ा है, मुम्बई वहीं खड़ी है, दिल्ली वहीं खड़ी है। कोई भी नहीं चलता, पर हम बोलने में ऐसा बोलते हैं। इसको बोलते हैं, गौण–भाषा। यह मुख्य भाषा नहीं है। यहाँ पर अर्थ बदलना पड़ता है। जब आपको ऑटो–रिक्शा पकड़ना होता है, तो क्या आवाज लगाते हैं, 'ओ रिक्शा'!... रिक्शा सुनता है क्या फिर किसको बोल रहे हैं, ओ रिक्शा! जैसे यह गौण कथन है, यह वास्तविक नहीं है, वैसे ही– 'मेरी आत्मा नहीं मानती' यह भी गौण कथन है। मुख्य कथन है कि– "मैं" मानने को तैयार नहीं हूँ। मैं ही तो 'आत्मा' हूँ, मेरी आत्मा मुझसे कोई अलग वस्तु नहीं है।

शंका–जो हम चहते हैं, वो हमें नहीं मिलता। जो हम नहीं चाहते, वो हमें मिल जाता है। ऐसा क्यों?

समाधान – ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि –

हम सर्वशक्तिमान नहीं हैं। हम इस दुनिया के मालिक या राजा नहीं हैं।

हम जो नहीं चाहते, दूसरे वो हमको जबरदस्ती थोप देते हैं। हमें वो काम करना पड़ता है। क्या करें,हम सबसे बड़े नहीं हैं। हम कईयों के नीचे रहते हैं। छोटे हैं तो हमें बड़ों की बात माननी पड़ती है, चाहे हमारी इच्छा हो, या न हो।

दूसरे लोग स्वतंत्र हैं, इसलिए वो अपनी इच्छा से काम करते हैं। हम जैसा चाहते हैं, वे वैसा सहयोग नहीं देते। यह उनकी अपनी स्वतंत्र इच्छा है। इसलिए सब कुछ हमारी इच्छानुसार नहीं हो सकता।

दर्शन योग महाविद्यालय
रोजड़ वन, गुजरात।

ओडिशा के सुन्दरगढ़ जिले में 230 परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित

उत्कल आर्य प्रतिनिधि के प्रचार श्री परमानन्द आर्य के प्रयत्न से सुन्दरगढ़ जिले के गेलेईबाहल ग्राम में 230 विदेशी मत में गए परिवारों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती, आर्य समाज साकेत दिल्ली के प्रधान श्री डॉ. पूर्ण सिंह जी डबास, दिल्ली के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी आदि ग्राम की सीमा पर पधारे तो ग्रामवासियों ने बाजे गाजे के साथ उनकी आरती उतारकर भव्य स्वागत किया। फिर सभी के यज्ञशाला में पहुंचने पर पं. विशिकेशन शास्त्री एवं श्री वासुदेव होता के ब्रह्मत्व में दीक्षा लेने वाले 230 लोगों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुति देकर यज्ञोपवीत धारणकर वैदिक धर्म को धारण किया। इस अवसर पर आशीर्वाद देने के लिए हरियाणा दिल्ली से 10–12 विद्वान पधारे थे। यह सारा कार्यक्रम पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के मार्ग दर्शन में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर आशीर्वाद देने के लिए श्री मनजीत कुमार शास्त्री ,सत्यवान आर्य, श्री गोपाल जी दहिया तथा स्थानीय सरपंच सहित सैकड़ों जन उपस्थित थे। प्रीतिभोज के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ओ, अघुनातन भारत के स्वप्न–द्रष्टा

मनुज से महर्षि,
और महर्षि से भगवान।
राजा ने उतारी आरती तुम्हारी,
राजसत्ता से भी कहीं अधिक–
तुम थे सामर्थ्यवान!
अस्पृश्यों को गले लगाया,
बनाया उन्हें माथे का चन्दन!
पाखण्ड हो गया खण्ड–खण्ड
लगा करने तुम्हारा वन्दन!
हताश, स्वाभिमान–शून्य
हिन्दू समाज को
ऋषि! तुमने उठाया आकाश तक...
अशिक्षा, रूढ़िवादिता, अज्ञान के
अंधकार से निकाल–
ले गए तुम उसे सूर्य के प्रकाश तक!
अपने हत्यारे को भी/दिया तुमने जीवन का दान...
मरण भी तुम्हारा था अद्‌भुत/कितना महान्!
संसार को दिया तुमने
सुख, समता, आनन्द/बन गए फिर–
युग–युगों में अमर दयानन्द!

शैवाल सत्यार्थी
समर्पण प्रिंटर्स, शिन्दे की छावनी
ग्वालियर–474009
मो. 09424260263

thearyasamaj.org

नैसर्गिक न्याय का शास्त्र शब्द 'राष्ट्र'

● देवनारायण भारद्वाज

सभी दिशाओं में स्थित सीमाओं से आवृत भूभाग की संज्ञा देश है। भूमि, जन और उनकी संस्कृति मिलकर इस भूभाग को 'राष्ट्र' की गरिमा प्रदान करते हैं। इस राष्ट्र शब्द में ही नैसर्गिक न्याय की भूमिका परिलक्षित होती है। इस 'राष्ट्र' शब्द का प्राण है– इसका प्रथमाक्षर '**रा**'। संस्कृत धातुकोश के अनुसार '**रा–दाने**' का अर्थ 'देना' अर्थात दान करना बताया गया है। क्या देना ऐसा होता है, जैसा हिन्दी कहावत रोज कहती है– *''अन्धा बांटे रेवड़ी फिर–फिर अपने को देय''*। नहीं नहीं–ऐसा नहीं। राष्ट्र की संस्कृति देने वालों के अन्धेपन को मिटाकर उन्हे प्रज्ञावान बना देती है। कोई नागरिक व्याधिवशात् भौतिक नेत्रों से अन्धा हो सकता है, किन्तु वह प्रज्ञाचक्षुओं से अवलोकन करते हुए जो दान करेगा, वह पक्षपात रहित नैसर्गिक न्याय की कोटि में ही आयेगा। नैसर्गिक न्याय वह स्वाभाविक न्याय प्रवाह है, जो राष्ट्र की संस्कृति में वायु की भाँति प्रवाहित रहता है। जिसे बालक जन्म से ही बड़ों के दर्शन–वचन क्रियाओं से स्वयमेव सीखता रहता है। उसके लिये यह 'राष्ट्र' शब्द स्वयं प्रत्यक्ष शास्त्र–अर्थात् नियमावली का ग्रन्थ बन जाता है, जिसमें दर्शन, वचन एवं अनुकरण के त्रिआयामी दिशा बोध निहित रहते हैं। नैसर्गिक न्याय का जहाँ सतर्कता पूर्वक पालन होता है वहाँ विधिक न्याय की आवश्यकता न्यून ही रहती है, जो परिस्थिति जन्य घटनाओं के निवारण–परिमार्जन हेतु मनीषियों द्वारा नियम–उपनियम की धाराओं को आलेखन कर बनाया जाता है।

'राष्ट्र' शब्द स्वयमेव एक नैसर्गिक न्याय का शास्त्र है– इसका निरूपण करते हैं। आप उस कथा से परिचित हैं, जिसमें देव, मानव–दानव तीनों ने ब्रह्माजी से उपदेश देने की याचना की, और उन्होंने तीनों ही को '**द**' अक्षर बोलकर अपना उपदेश समाप्त कर दिया। अपनी अपनी संस्कृति एवं प्रवृत्ति के अनुसार उन्होंने इसी एक '**द**' के क्रमशः (**दाम्यत, दत्त, दयध्वम्**) इन्द्रियदमन, दान एवं दया अर्थ निकाल लिए। इसी प्रकार राष्ट्र शब्द की व्याख्या उसे स्वयं एक शास्त्र बना देती है। जैसा कि पूर्व व्यक्त '**रा**' अक्षर देना अथवा दान करने का अनुबोधन करता है। देने वालों की दातव्यता ही उन्हें दिव्यता प्रदान करती है। यह दिव्यता देवों का भूषण है। निरुक्त में देव शब्द निरुक्ति है–**देवो दानाद्वा** (दानदाता), **दीपनाद्वा** (प्रकाश प्रदाता), **द्योतनाद्वा** (प्रकाश स्वरूपता)। देव शब्द '**दिवु**' धातु से बना है। दिव्यगुण–कर्म स्वभाव वालों को देव कहते हैं: वे चाहे अपठित हों, अल्पपठित हो अथवा अधिक पठित हों, किन्तु अनुकरण, आचरण एवं अनुभव की भट्टी में पके हों–वह सभी कहलाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शतपथ ब्राह्मण के कथनानुसार ''**विद्वांसो हि देवाः**'' विद्वानों को देव तो माना है, किन्तु इससे अधिक महत्व धार्मिकों को दिया है, क्यों कि धार्मिक व्यक्ति अपनी सीमा में धर्माचरण करता है, किन्तु विद्वान धर्म संहिता का ज्ञाता तो होता है, किन्तु उसके विपरीत आचरण करता है, तो वह श्रेय का नहीं हेय का पात्र बनता है। वर्तमान में पर्यावरण का प्रदूषण, विवाह पूर्व सहसम्बन्धन एवं समलैगिक व्यवहार इन्हीं अधार्मिक विद्वानों की देन है, क्योंकि बड़े–बड़े वैज्ञानिक एवं प्राध्यापक होकर भी इनका समर्थन करते देखे जाते हैं।

हाँ तो राष्ट्र के नागरिकों की कोटि '**रा**' स्तरीय होनी चाहिए, इसमें रहने वाले इसको रा+स्थ करते हैं। इसीलिए इन सभी की संज्ञा देव होती है। राष्ट्र में सर्वत्र जो स्वर गुंजायमान होंगे–''**वे मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव**'' (तैत्तिरीयोपनिषद्) के रूप में सुनाई देंगे। वह स्त्री हो या पुरुष किसी भी सकारात्मक गुण कर्म स्वभाव में न्यस्त हो –वह एक दूसरे का सहयोगी सम्बन्धी रूप में परस्पर जुड़ा हुआ है। शतपथ ब्राह्मण में–यज्ञ को विष्णु और विष्णु को राष्ट्र की संज्ञा दी गई है। यहाँ पर पुराण में व्यक्त विष्णु की चार भुजाओं की संकल्पना मात्र पूजा की नहीं ऊर्जा की है, जो शंख, गदा, चक्र, पद्म क्रमशः वेद घोष, राष्ट्र रक्षण, कृषि–वाणिज्य, उद्योग का क्रमागत चक्रमण एवं पदों में पुरुषार्थ रूपी कमल या विकास की स्वर्णमयी यात्रा का पथदर्शन कराती है। यज्ञाग्नि में '**स्वाहाकार एवं इदन्नमम**' की भावना के साथ हविष्य का अर्पण किया जाता है, फिर भी सामग्री सूक्ष्म होकर आकाश में तो फैलती जाती है, किन्तु लौटकर यज्ञकर्ता को भी अन्तः एवं ब्राह्य स्तरों पर पोषण प्रदान करती है। हर नागरिक '**माता भूमिः' पुत्रोऽहं पृथ्विया**'' (अथर्व 12.1.12) भूमि मेरी माता मैं इस पृथिवी का पुत्र हूँ–कहते हुए अपने राष्ट्र की सेवार्थ समर्पित होने को उद्यत रहता है।

ब्रह्मवक्त्रं भुजो क्षत्रं कृत्स्नंमुरूदरं विशः।
पादो यस्याश्रिताः शूद्रास्तस्मै वर्णत्मने नमः।।

महाभारत में चारो अंगों के वर्णन से इस वर्णात्मा राष्ट्र पुरुष से आच्छादित मातृभूमि को ''**राष्ट्रदेवो भव**' की महिमा से मण्डित किया गया है तो हृदय के उच्वासन पर विराजकर वन्दना की अधिकारिणी बन जाती है और सभी एक स्वर से बोल पड़ते हैं – **वन्दे मातरम्।**

'राष्ट्र' का 'रा' एक विद्युत् का प्रवाह है। इसके सतत संतरण के लिए सुचालक चाहिए। इसके मध्य कोई कुचालक आया नहीं कि इसके प्रवाह में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। राष्ट्र के नागरिकों को ही अपनी जान की बाजी लगाकर उस कुचालक को कुचलना पड़ता है। मुक्ति युद्ध के महानायक महाराणा प्रताप की रक्षा के लिए यह बाजी भील योद्धा वीरवर झालापति मान्ना को लगानी पड़ी, राष्ट्र–सैन्य–संयोजन हेतु महाश्रेष्ठी भामाशाह ने अपना अकूत कोष महाराणा प्रताप को अर्पित करने में देर नहीं की। महाभारत के युद्ध में अन्याय के ऊपर न्याय की यात्रा को अग्रसर करने हेतु वीर बालक अभिमन्यु ने अपने बलिदान में किंचित् संकोच नहीं किया। राज्य के उत्तराधिकारी राजकुमार उदय सिंह क प्राणों की रक्षा के लिए सम्मुख ही अपने पुत्र चन्दन को राष्ट्र–राक्षस बनवीर की तलवार की भेंट चढ़ा दिया। नववधू रानी हांडी युद्ध में पति के विजय हेतु अपने सिर की मुण्डमाला बनाकर भेंटकर देती है। मातृभूमि की अस्मिता के लिए महारानी पद्मिनी अपनी अनेकशः सहेलियों सहित जौहर ज्वाला में कूद पड़ती हैं।

पाठक कह सकते हैं कि इतिहास की असंख्य बलिदान गाथाओं का ज्ञान किसे नहीं। नहीं–नहीं आधुनिक युग में भी ऐसे प्रेरक प्रसंग कम नहीं हैं। भारत माता की बेड़ियों को काटने के लिए पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी अस्थियों को महर्षि दधीच की भांति भारत माता को भेंट किया था। पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला खां, सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, अनगिनत वीर युवाओं ने अपने आत्म बलिदान से राष्ट्र–माता को पूजित किया। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, महात्मा गांधी, स्वामी श्रद्धानन्द, सरउार पटेल, पं. नेहरू प्रभृति ने अपनी शानदार सुख सुविधाओं को राष्ट्र–माता की स्वतंत्रता की बलि वेदी पर आर्पित किया।

'**रा**' की दातव्यता की विद्युत् को ''**यतेमहि स्वराज्यं**'' (ऋ. 5.66.6) यत्न पूर्वक बनाये रखना पड़ता है। आजकल के बढ़े हुए स्वचालित वाहनों के भीड़भाड़ पूर्ण यातायात में ''सावधानी हटी–दुर्घटना घटी'' की भांति यह '**रा**' कभी अपहर्ता न बन जाये, एतदर्थ ''**अपघ्नन्तो अराव्णः**'' (ऋ.9.63.5) के अपहरणी परिग्रही संग्रहकर्ता अदाताओं का ध्वंस राष्ट्र के अग्रणी नायकों को करते रहना पड़ता है। इसके लिए सम्राट् अश्वपति की घोषणा राष्ट्र का मार्गदर्शन करती है।

''मेरा सात्विक साम्राज्य,
चोर कृपण ना कायर बसते।
कोई दुर्व्यसनी नहीं यहाँ,
यज्ञ वेदस्वर घर–घर चलते।।
जब नर ही नहीं दुराचारी,
तब क्यों होगी कोई नारी।
स्वागत कर सन्त अतिथियों का,
शासक होता है आभारी।।''

वेद का हर मंत्र (मननात् त्रायते) मनन करने से त्राण–सुरक्षा प्रदान करता है। इसीलिए वह नैसर्गिक न्याय का स्रोत है। नैसर्गिक न्याय के व्यवधान को हटाने के लिए विधिक न्याय का प्रावधान करना पड़ता है, वैदिक युग में इसे मनुस्मृति एवं आधुनिक युग में इसे संविधान की संज्ञा दी गई है। महर्षि मनु ने उसे वेदानुसार बनाया था, जिसमें ऊपर वर्णित चारों वर्ण अन्तः रुपान्तरणीय थे। बाद में अवैदिकों ने उसमें प्रक्षेपण कर वर्णों को ऊँच–नीच एवं वर्ग भेद से जोड़ दिया दिया। वर्तमान में संसद के दलगत बहुमत के बल पर शासन तन्त्र नियमानुकूल नहीं। मनोनुकूल संशोधन, जब चाहते तब कर लेते हैं। जिसका ज्वलन्त नहीं ज्वाला – ज्वलित उदाहरण जातिगत आरक्षण का प्रावधान है।

शासक को राष्ट्र में न्याय व्यवस्था हेतु–'**ब्रह्म व क्षत्रं च राष्ट्रं विशश्च त्विषिश्च यशश्च वर्चश्च द्रविणं च।।** (अथर्व 12.5.8) ज्ञान विज्ञान के विद्वानों को बढ़ाना चाहिए, अन्याय को नष्ट करने वाले वीर पुरुषों को उत्पन्न करना चाहिए, उत्तम अनुशासन से युक्त राज्य की व्यवस्था करनी चाहिए, धन–धान्य के वृद्धिकर्ता व्यवसायियों का विकास करना चाहिए, हर नागरिक में शुभ गुणों का प्रकाश करके यश–तेज एवं ऐश्वर्य को बढ़ाना शासक का माननीय धर्म है। ''**संराध्यन्तः सधुराश्चरन्तः**'' (अथर्व 3.30.5) एक दूसरे की उन्नति में सहायक बनकर एक धुरी वाले बनकर ''**वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहितः**'' (यजु. 9.23) हमें राष्ट्र के जागरूक पुरोहित (नायक) हाने की घोषणा करनी चाहिए।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

ईश्वर -प्रणिधान

● राज कुकरेजा

एक संन्यासी जी ईश्वर–प्रणिधान पर चर्चा कर रहे थे कि इस का सीधा सा अर्थ है समर्पण करना या समर्पित हो जाना। ईश्वर से प्रिय किसी को न मानना ही ईश्वर–प्रणिधान कहलाता है। जैसे बालक को सबसे प्रिय माँ होती है। माँ से बिछुड़े हुए बालक के सामने सब लौकिक आकर्षण फीके होते हैं। उसे तो केवल माँ ही चाहिए। माँ ही बालक की श्रद्धा, निष्ठा व विश्वास की मूर्ति है। इसी से सम्बन्धित संन्यासी जी ने अपने जीवन का एक प्रसंग सुनाया कि एक नन्हा बालक माँ का कहना नहीं मानता था। अपनी हर बात मनवाने की ज़िद करता और माँ भी मोह वश उस की हर ज़िद के सामने अपने घुटने टेक देती। एक दिन जब बालक माँ का कहना नहीं मान रहा था तो उसी समय माँ की नज़र बाहर पार्क में टहलते हुए मुझ संन्यासी पर पड़ी। माँ ने बालक को धमकाते हुए कहा कि देखो यदि कहना नहीं मानोगे तो संन्यासी बाबा तुम्हें पकड़ कर ले जायेंगे। संन्यासी बाबा की धमकी से बालक माँ का कहना मान लेता। माँ को अब बालक से बात मनवाने का मानो हथियार मिल गया। एक दिन मैं परिवार से मिलने उन के घर गया। संन्यासी को आया देख बालक झट माँ की गोद में बैठ गया। जब भी मेरी दृष्टि बालक पर पड़ती बालक मुझे क्रोध भरी नज़र से देख कर अपनी मुट्ठी तान लेता। मैने माँ से पूछा कि बालक उस की ओर मुट्ठी क्यों तान रहा है ? माँ ने बताया कि आप का डर दिखा कर हम इस से काम करवा लेते हैं और अब मेरी गोदी में बैठा स्पयं को शेर समझ आप को मारने की धमकी दे रहा है।

आश्चर्य है! कि एक सांसारिक माँ जो अल्प सामर्थ्य, अल्प बल और अल्प क्रिया वाली है, जिस माँ के साथ तो सम्बन्ध भी अनित्य है, उस की गोद में बैठा बालक स्वयं को निडर एवं निर्भीक समझ रहा है। बालक माँ की गोद में सुरक्षित है, उसे माँ पर पूरी श्रद्धा व विश्वास है। आध्यात्मिक जगत में ईश्वर ही जगत्जननी परम करुणामयी जगदम्बा है, हम सब की माँ है। यह माँ तो स्वयं अपने अनंत गुण–कर्म–स्वाभावों से तथा अपने बनाये दिव्य गुण युक्त जड़ व चेतन पदार्थो से हम सब मनुष्यों की निरंतर सब प्रकार से रक्षा कर रही है। यह माँ तो अत्यंत सामर्थ्य, अत्यंत बल एवं अत्यंत क्रिया वाली है और सकल ऐश्वर्य युक्त है। इस माँ के साथ तो नित्य सम्बन्ध है, जो अनादि काल से है और अनादिकाल तक रहेगा। इस माँ के सदृश हितैषी और कोई नही है। यही माँ ही हम सब की पिता, राजा, न्यायाधीश और सब सुखों को देने वाली है, विडम्बना यह है कि इस माँ पर बालक के समान अटूट विश्वास कोई विरला ही रख पाता है।

महर्षि पतजंलि जी प्रणीत योग दर्शन में योगमय जीवन बनाने के लिय विविध उपाय बताये हैं। इन उपायों में एक उपाय ईश्वर–प्रणिधान भी है। प्रणिधान का अर्थ भक्ति विशेष हैं। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी स्तुति–प्रार्थना–उपासना के मन्त्रों के अर्थो में 'विधेम' शब्द का अर्थ लिखते हैं कि ईश्वर की विशेष भक्ति किया करें। भक्ति का अर्थ भी ऋषि स्पष्ट करते हैं कि ईश्वर की आज्ञा पालन करने की में तत्पर रहें अर्थात् अपने आत्मा को परमेश्वर की आज्ञानुकूल समर्पित कर देवें। समर्पित व्यक्ति ईश्वर से अधिक प्रिय किसी को मानता, ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल ही आचरण करते हुए, प्रत्येक कार्य ईश्वर को समर्पित करता है, और लौकिक फल की कामना नहीं करता। शरीर, बल, धनादि समस्त साधनों का प्रयोग ईश्वर प्राप्ति के लिए करता हैं। भौतिक उपलब्धि जैसे धन, मान, प्रतिष्ठा, यश आदि की प्राप्ति के लिए नहीं करता। ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी है। शरीर, वाणी तथा मन से कार्य को करते हुए मन में यह भावना बनानी चाहिए कि ईश्वर मेरी प्रत्येक चेष्टा को देख रहे हैं। इसलिए मैं छुप करके कोई भी कर्म नहीं कर सकता। मन, वाणी एवं शरीर से किये हुए सभी कर्मो को ईश्वर को समर्पित कर दें अर्थात् जो कर्मो का फल मिले उसी को सहर्ष स्वीकार करना। मनुष्य की यह दुर्बलता है कि किये हुए शुभ कर्मो का फल तो अधिक चाहता है और अशुभ कर्मो का फल प्रथम तो चाहता ही नहीं, सोचता है कि क्षमा मांगने से फल नहीं मिलेगा या फिर कम मिलेगा। ऐसा समझना ईश्वर–प्रणिधान के विपरीत भावना है। न्यायकारी ईश्वर को न्यायकारी मानना ही ईश्वर प्रणिधान हैं।

अधिकांश लोग ईश्वर–प्रणिधान की विधि को ही नहीं जान पा रहे हैं। जिस ईश्वर की आज्ञा पालन करनी है, प्रथम उस के स्वरूप को शब्द प्रमाण से जानें। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखते हैं " **ईश्वर–जिस के गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतन मात्र वस्तु है तथा एक, अद्वितीय, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वत्रव्यापक, अनादि और अनंत आदि सत्य गुण वाला है और जिस का स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनंदी, शुद्ध न्यायकारी, दयालु और अजन्मा आदि हैं। जिस का कर्म जगत की उत्पति, पालन और विनाश करना तथा सब जीवों को पाप पुण्य का ठीक–ठीक फल पहुंचाना है "** अधिकांश लोग ईश्वर के स्वरूप को नहीं समझ पा रहे हैं। परिणाम स्वरुप कितनी हानि हो रही हैं। बड़ी विडम्बना है कि ईश्वर के सच्चे स्वरूप को न समझ कर अपने मन माने ईश्वर बना लेते है। वास्तविकता यह है कि सब विचार शील लोगों का आत्मा यह साक्षी देता है कि सृष्टि नियम विरूद्ध चमत्कार में विश्वास अज्ञानता व मूर्खता है। हमारी इस मूखता का लाभ स्वार्थी बाबा लोग गुरूडम के सहारे जो आजीविका चलाते हैं, जनता को भयभीत करने का वातावरण बनाते हैं और यही धूर्त लोग भयभीत व्यक्ति का सब प्रकार से शोषण और दोहन करते हैं। आज इन बाबा लोगों की भीड़ दूरदर्शन पर देखने को मिल रही है। ईश्वर में दृढ़ विश्वास न होने के कारण ही प्रायः व्यक्ति भयभीत रहता हैं। **सत्य तो यह है कि जो ईश्वर से डरता है, वह और किसी से नही डरता है और जो ईश्वर से नही डरता वह सब से डरता है।** अज्ञानी बन कर दैववाद , जंत्री–तंत्री, झाड़–फूंक, गंडे–तावीज, जादू–टोना आदि सब जो अवैदिक तन्त्र के उपकरण हैं उन में फंसते जा रहे हैं। यदि हम थोड़ी गहराई में उतर कर विचारें कि क्या हम ईश्वर परायण हैं? तो हमें ईश्वर विश्वास की सार्थकता स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगती है। प्रायः बातें तो ऐसी करते हैं जैसे हम से बढ़ कर ईश्वर विश्वासी अन्य कोई है ही नहीं किन्तु ज़रा सी मुसीबत में धैर्य खो बैठते हैं और अधीर हो कर कार्य ऐसे–ऐसे करते हैं जिनसे परिलक्षित होता है कि जैसे हमारी दृष्टि में ईश्वर का कोई अस्तित्व ही न हो। इस समय पीर, फकीर ,मसान, गढ़ी, कब्र, समाधि, पेड़, पत्थर, नदी–तालाब आदि ऐसी कोई भी जगह नहीं बचती, जहाँ मानव–मस्तक झुकता नहीं है। यह हमारे हितों के विपरीत है, दुर्भाग्य यह है कि हम स्वयं ही ईश्वर से दूरी बना लेते हैं। ईश्वर विश्वास एवं आध्यात्मिकता ही हमें बुराइयों की ओर जाने से रोकती है।

एक अड़ी रोचक कथा है। भक्त ने भगवान की भक्ति की और भगवान उसकी भक्ति से अत्यंत प्रसन्न हुए भक्त से कहा कि वर माँगो। भक्त बोला कि मैं कैसे विश्वास करूं कि आप सर्वव्यापक, सर्वज्ञ हो और मुझे देख, सुन जान रहे हो? तुम तो मुझे दिखाई देते नहीं। मैं आप को देखना चाहता हूँ। भगवान बोले कि "मैं तो निराकार हूँ, दिखाई कैसे दे सकता हूँ? पर चुंकि तुम्हें वचन दे चूका हूँ, मैं तुम्हारे साथ–साथ रहूँगा"। भक्त ने कहा कि विश्वास नहीं होता। भगवान बोले कि तुम पीछे मड़ कर देख लेना कि तुम्हारे दो पैरों के पीछे जो और दो पैरों के निशान होंगे वे मेरे होंगे। अब भक्त अपने पीछे मुड़ कर देख लेता और उसे दो अपने पैरों के व दो भगवान के पैरों के निशान दिखाई देते तो निश्चिन्त हो जाता। एक बार भक्त के परिवार में एक अप्रिय घटना के होने से भक्त अपने ही शोक में इतना डूब गया कि ईश्वर को ही भूल गया। थोड़ा सम्भला तो ईश्वर का अचानक उसे ध्यान आ गया। अब उस ने मुड़ कर देखा तो उसे केवल दो पैरों के चिन्ह दिखाई दिए तो घबरा कर भगवान से बोला कि मुझे मालूम था कि दुःख की घड़ी में तुम भी साथ छोड़ दोगे। भगवान से गिले शिकवे कर ही रहा था कि उसे भगवान की ध्वनि सुनाई पड़ी कि भक्त ! मैं तो तुम्हारे साथ हूँ। जो दो पैरों के निशान देख रहे हो वो तो मेरे हैं। तुम्हे तो मैंने अपनी गोद में उठा रखा था, तुम तो अपने दुःख में इतने अधीर और विचलित हो चुके थे कि तुम्हारे में चलने का सामर्थ्य ही नहीं था और उल्टा तुम अपने दुःखों का सारा दोष भी मुझ पर ही डाले जा रहे थे। गये थे कि अविद्या ही सब प्रकार के दुःखों की जननी है। हाँ मुझे तुम से बहुत बड़ी शिकायत है कि तुम प्रीत तो करना चाहते हो परन्तु रीत निभाना नहीं जानते। तुम तो दुःख की घड़ी में मेरा नाम तक भूल गये कि मेरा एक नाम '**भुवः**' भी है। मैं स्वयं दुःखों से रहित हूँ और अपने उपासकों को भी दुःखों से छुड़ाता हूँ , मेरे स्वरूप का भी ध्यान तुम ने बिसार दिया कि मैं '**स्वः**' अर्थात् सुख स्वरूप हूँ और अपने भक्तों को भी सुख ही पहुंचाता हूँ। पर तुम ने मुझ पर विश्वास ही नहीं किया।

उल्टा अपने दुःखों का मुझे दोषी ठहरा दिया।

इस वार्ता पर आक्षेप कर सकते हैं कि अवैदिक है, हम इस के भाव को पकड़ें। इस के द्वारा मुख्य उद्देश्य को उजागर करना है कि ईश्वर की सत्ता में दृढ़ विश्वास और विपरीत परिस्थितियों में भी उससे सम्बन्ध बनाये रखना। यह कथा हम सब के लिए एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण संदेश देती है कि कैसे संकट की घड़ी में हमारा ईश्वर में विश्वास डगमगाने लगता है। मन में कितनी ही शंकाएं व संशय उत्पन्न होने लगते हैं और ईश्वर की सत्ता पर से भी विश्वास डोलने लगता है कि ईश्वर है भी या नहीं।

ईश्वर प्रणिधान से, उस सर्वशक्तिमान् जगत्पिता के निरंतर सम्पर्क में बने रहने से बुद्धि, शरीर, आत्मा, मन–मस्तिष्क सबका विकास होता है। ईश्वर विश्वास

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

thearyasamaj.org

बाला साहब देशपाण्डे का जन्म शताब्दी वर्ष और वनवासी कल्याण आश्रम का षष्टी पूर्ति वर्ष

ईसाई धर्मान्तरण के चक्र में पुनः भारतीय समाज

● हरिकृष्ण निगम

देश में स्वतंत्रा मिलने के पहले नागपुर से लगभग 800 किलोमीटर दूर आज के छतीसगढ़ के पिछड़े जनजातीय वनवासी क्षेत्र में एक समय सेवा के नाम पर व प्रलोभन के माध्यम से विदेशी ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण का कार्य अबाध रूप से चलाया जा रहा था। वह जरापुर का क्षेत्र कहलाता था। इसी तरह चाहे मण्डला हो या जबलपुर अथवा डिंडोरी या अमरकन्टक हो, जहां से नर्मदा का उद्‌गम माना जाता है, वहां भी अनेक ईसाई चर्चों का एकाधिकार था। कहते हैं कि जब से विश्वविख्यात नृतत्वशास्त्री वेरियर *एल्विन* ने डिंडोरी में रहकर एक बैगा जाति के स्त्री से विवाह कर उसे अपने प्रचार कार्य का केन्द्र बिन्दु बनाया था दुनिया भर के नृजाति विज्ञान के अध्येताओं के साथ साथ वे पण्डित जवाहरलाल नेहरु के प्रशंसा के पात्र भी बने थे और उन्हें कदाचित् इसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए पूर्वोत्तर के राज्यों व असम का गवर्नर भी नियुक्त कर दिया गया था।

आज भी मुम्बई के *'एन्थ्रोपोस इन्टीट्यूट द्वारा'* अनेक चर्च सेमिनरियों में भारत के आदि वासियों के बारे में पढ़ाई जाने वाली अनेक पुस्तकें विशेषज्ञों के लिए स्वीकृत पाठ्य पुस्तकें होती हैं। जहां तक मध्यप्रदेश के पूर्वी मण्डला जिले की गोंड व बैगा जातियों पर *'सर्बेराइन सिल्वा एण्ड स्टीफेन फुक्स'* के टोकियो में 1965 में प्रकाशित ग्रंथ का सन्दर्भ है, वह स्पष्ट कहता है कि कितने बड़े स्तर पर यह सिद्ध करने का षड्‌यंत्र चल रहा था कि आदिवासी हिन्दू नही हैं, इसलिए उन्हें ईसाई बनाने का पूरा अधिकार है। डॉ. स्टीफेन फुक्स ने दक्षिण कनाडा के आदिवासियों पर कई ग्रंथ लिखे। इसी तरह एन्सी डब्लू बेपटिस्ट का बाम्बे, सालसेट, बेसीन पर 1967 का *'द ईस्ट इण्डियन'* पर प्रकाशित ग्रंथ व जॉन बी. फेरेरा का स्टीफेन फुक्स और क्लाउस क्लोस्टरमायर का मुम्बई से ही 1969 में प्रकाशित *'एसेज इन एथनोलाजी'* धर्मान्तरण के ईसाई रहस्यों का पिटारा खोल देता है।

आज भी जबलपुर के पिपरिया, मण्डला और नर्मदा के अमरकन्टक क्षेत्र व पंचमढ़ी के सूदूर वन, पर्वतों उपत्यकाओं झरनों व जलस्रोतों के ऐसे दुर्गम स्थान हैं, जो यह लेखक अपने अनुभवों से जानता है, कि किस तरह ईसाई मिशनरियों ने वहां धर्मान्तरण का नागपाश फैला रखा है। यह केवल कल्पना की जा सकती है आज से बासठ वर्ष पूर्व सन् 1952 में इसी व्युर्त्क जशपुर नगर में वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना श्रद्धेय बाला साहब देश पाण्डे ने की थी जिनका पहला नाम रमाकान्त केशव देशपाण्डे था। वर्षों पहले से गंभीर वनवासी समाज की समस्याओं के दो मार्ग थे– एक संघर्ष की अवधारणा के साथ नक्सलवाद के भयावह साये में ढला। दूसरा मार्ग विकास की ओर था जिसको बालासाहब देशपाण्डे ने नेतृत्व देकर वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना के माध्यम से जीवन पर्यन्त चलाया। उन्ही की जन्मशताब्दी वर्ष की अवधि में देश में उसकी 60 वर्षों की सेवा का सिंहवलोकन किया जा रहा है। सन् 1952 में उनको वनवासी क्षेत्र में उनकी गरीबी, उनकी अंधश्रद्धा उनके शोषण व पिछड़ेपन के विरुद्ध कार्य करने का जो दैवी संकेत व दायित्व मिला उसे उन्होंने जीवन भर निभाया।

प्रारम्भ में जशपुर के राजा विजयभूषण सिंह जूदेव के समर्थन से बनवासी बालकों के लिए एक छात्रावास बना था पर श्री बालासाहब देशपाण्डे के श्रम व समर्पण का यह चमत्कार हुआ आज देश के हर भाग के 90 प्रतिशत वनवासी जिलों में विविध कार्य चल रहे हैं। और 12 हजार से अधिक गांवों 17000 से अधिक प्रकल्प है। सेवा, शिक्षा स्वास्थ्य व स्वालम्बन आदि क्षेत्रों में कार्य के लिए बड़े–बड़े नगरों–महानगरों में भी समितियां कार्यरत हैं। पहले मध्यप्रदेश के जबलपुर, मण्डला, रामगढ़ और सरगुजा जिलें में गोंड, कंवर, उरोग, कोरव, बैगा, पण्डो आदि वनवासी जातियां वर्षों से रहती थीं। मुगल आक्रमणों के समय अनेक जंगलों में छिप गईं और हिन्दूसमाज से भी अलग–थलग पड़ गई थीं। तभी वहां गहिरा गुरु का जन्म 1905 में हुआ था जिन्हें वनांचल का ज्योतिपुंज कहा जाता है। उन्होंने स्थानीय लोगों के उद्धाव कुरीतियों के निवारण के लिए अपना जीवन खपा दिया। उनके सनातन सन्त समाज ने ग्रामीणों की आवश्यकता के लिए बीजमेला शुरू किया था। बालासाहब देशपाण्डे के मन में गहिरा गुरु के प्रति अत्यन्त आदर था। भीमसेन चोपड़ा, मोरुभाऊ केतकर, कृष्णराव दामोदर सप्रे, रामभाऊ, बिन्दूराव गोडबोले तथा भास्करराव शिवराम कलम्बी तथा जगदेवराम उरांव से उनकी अत्यन्त घनिष्ठता थी और उनके सहयोग के कारण उस क्षेत्र में चल रहे मिशनरियों के धर्मान्तरण के षड्‌यंत्र विफल होने लगे थे।

झारखण्ड के विद्यासागर के छात्रावास, स्वास्थ्य केन्द्र, गोशाला जैसे सर्वांगीण विकास के प्रकल्प देश के कोने–कोने में बनाने के साथ उनकी लोककलाओं की पारम्परिक संस्कृति, पूजापद्धति और शिक्षा पद्धति द्वारा भी वनवासियों को मुख्यधारा से जोड़ने के अनेक प्रयत्न किए गए। बाला साहब का अपने जीवनवृत्त किसी महानायक या युग पुरुष की जीवन गाथा से कम नहीं था। साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उन्होंने वकालत की शिक्षा पूरी की थी। 1952 में कल्याण आश्रम की स्थापना के बाद सन् 1995 में जीवनपर्यन्त वे वनवासियों के प्रेरक पथप्रदर्शक बने रहे। उनका जन्म 1913 में अमरावती में हुआ था और इसलिए 2013 का गत वर्ष उनका जन्मशती वर्ष था जब उज्जैन में एक अखिलभारतीय अधिवेशन आयोजित किया गया था।

सन 1942 में बाला साहब रामटेक में वकालत करते थे और देश में जब 'अंग्रेज भारत छोड़ो का आन्दोलन चल रहा था' वे भी उसमें सक्रिय होकर भाग ले रहे थे। एक दिन रामटेक में एक जुलूस में प्रदर्शनकारियों की भीड़ पर पुलिस ने गोली चलाने का आदेश दे दिया था। वहां पर बाला साहब उपस्थित थे जिन्होंने पुलिस अधिकार को डांटते हुए पूछा कि उसके पास गोली चलाने का आदेश है? इस परिस्थिति में अपनी सूझबूझ से उन्होंने एक संभावित हादसे को टाल दिया। फिर जब उलटे भीड़ ने अधिकारी को उत्तेजित हिंसक बनकर घेरकर मारना चाहा तो बाला साहब ने उनकी जान बचाई।

1947 में स्वतंत्रता के बाद भारत के मध्यक्षेत्र में एक राज्य बना सी.पी.एण्ड बरार। उसके मुख्यमंत्री रविशंकर शुक्ल थे। वे जब एक बार रायगढ़ जिले में दौरे पर थे वहां कुकरी के आसपास लोग उनके विरूद्ध प्रदर्शन कर रहे थे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि वे सब एक चर्च के पादरी के बहकाने से देश के प्रति विद्वेष और विद्रोह की भावना से ग्रस्त थे। उन्होंने तुरन्त गांधीवादी ठक्कर बप्पा सह–सलाहकर एक उपयुक्त व्यक्ति की तलाश की जिससे इस अलगाववादी भोले–भाले लोगों को सही मार्ग दर्शन दिया जा सके। नागपुर के प्रसिद्ध वकील वणीकर ने उस समय बाला साहब देशपाण्डे का नाम सुझाया था। जशपुर के खण्ड विकास अधिकारी के रूप में उस समय बाला साहब देशपाण्डे की नियुक्ति वहां के वनवासियों के लिए वरदान बन गया। शिक्षा के माध्यम से वनवासियों की अस्मिता जागृत करने के लिए उन्होंने संकल्प लिया कि वे सौ सरकारी विद्यालय खोलेंगे और स्वयं ठक्कर बप्पा अपनी वृद्धावस्था के बावजूद जशपुर में यह चमत्कार देखने स्वयं आए थे। बालासाहब की लोकप्रियता से ईसाई मिशनरी बेचैन हो उठे और 1952 में आम चुनाओं के समय वे बाला साहब के जशपुर से स्थानान्तरण कराने के लिए खुलकर दबाव डालने लगे। स्वार्थी कांग्रेस नेताओं ने चर्च के दबाव में बालासाहब का तबादला जशपुर से चन्द्रपुर करा दिया। बाला साहब को यह अमान्य था क्योंकि जशपुर उनका कार्यक्षेत्र ही नहीं कर्मक्षेत्र बन चुका था। वे अदालत से जीत गये पर इस घटना से उनका मन विचलित था, इसलिए उन्होंने सरकारी सेवा त्यागकर 26 दिसम्बर 1952 में कल्याण आश्रम की स्थापना की। स्थितियां प्रतिकूल थीं पर उन्होंने पहला छात्रावास खोला और विविध कार्यक्रमों का प्रारंभ किया।

बाला साहब ने वहां की सादरी भाषा सीखी थी और जब 1954 में ईसाई मतान्तरण की गतिविधियों की जांच हेतु *'नियोगी कमीशन'* का गठन हुआ तब अपने सहयोगियों, कृष्णराव सप्रे, भीमसेन चोपड़ा और मोऊभाऊ केतकर के साथ मिलकर अनेक अभिलेख व साक्ष्य एकत्रित कर आयोग के समक्ष रखे थे। भोले–भाले वनवासियों को प्रलोभन द्वारा गैर–कानूनी धर्मान्तरित करना सिद्ध होने से देश में यह पहला आधिकारिक पर्दाफाश था। 1975 में आपात्‌काल के दौरान कल्याण आश्रम के कार्य पर प्रतिबन्ध लगाकर बाला साहब को जेल में रखा गया था जहां से वे 1977 में रिहा किए गए थे। तत्पश्चात् तत्कालीन सरसंचालक के बाला साहब देवरस से मिलकर उन्होंने भविष्य की योजना बनाई कि इस कार्य को अखिल भारतीय

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

हमारे स्वयं के हित में है जल व अन्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग

● सीताराम गुप्ता

कुछ दिन पहले एक विवाहोत्सव में जाना हुआ। भव्य आयोजन था। खाना शुरु करने से पहले हाथ धोने के लिए पानी की तलाश की लेकिन कहीं पर भी पानी नहीं रखा गया था जहाँ सुविधापूर्वक हाथ धोए जा सकें। सब कुछ था सिवाय पानी के । पानी कहीं किसी जग या टंकी में उपलब्ध नहीं था लेकिन पानी की प्लास्टिक की बोतलें ज़रूर रखी थीं। 200 मिली लीटर पानी से लेकर दो लीटर पानी तक की प्लास्टिक की बोतलें पर्याप्त संख्या में कई काउण्टरों पर सजी थीं। जिसको हाथ धोने होते वह सुविधानुसार हाथ बढ़ाकर कोई एक बोतल उठाता, ढक्कन की सील तोड़ता और हाथों पर कुछ पानी डालकर शेष पानी से भरी बोतल वहीं रखे बड़े–बड़े टबों में फेंक देता।

टबों में ही नहीं चारों तरफ ढेर लगा था आंशिक रूप से प्रयुक्त पानी की बोतलों का। उनमें से निकल–निकल कर पानी चारों तरफ़ फैल रहा था और कीचड़ भी हो रही थी। आजकल जहाँ जाओ कमोबेश यही स्थिति दिखलाई पड़ती है। पानी और पीने योग्य पानी का ये हश्र देखकर जी दुखी हो जाता है। क्या पानी की इस बर्बादी, इस अविवेकपूर्ण उपयोग को रोका नहीं जा सकता? क्या हाथ धोने के लिए सामान्य स्वच्छ जल टूटी लगे जग अथवा टंकियों में उपलब्ध नहीं कराया जा सकता? यह असंभव नहीं लेकिन इसके संभव न होने के पीछे कई कारण हैं जो भयंकर हैं।

पेय जल का तो दुरुपयोग होता ही है साथ ही प्लास्टिक की बोतलों का भी बेतहाशा इस्तेमाल किया जा रहा है। हाथ धोने हैं तो एक बोतल, कुल्ला करना है तो दूसरी बोतल, भोजन के बीच में पानी–पीना है तो तीसरी बोतल, भोजनोपरांत हाथ साफ करने हैं या पानी पीना है तो चौथी व पाँचवी बोतल..... इस तरह एक आदमी के लिए पाँच–सात बोतलों की सील तोड़ना व उनमें उपलब्ध पानी की क्षमता का अत्यल्प प्रयोग अथवा दुरुपयोग सामान्य सी बात है। प्लास्टि की बोतलों व गिलासों का प्रयोग करना न केवल पर्यावरण के लिए घातक है अपितु इस्तेमाल करने वाले के लिए भी अस्वास्थ्यकर है इसीलिए प्लास्टिक के उपयोग को हतोत्साहित किया जाना अनिवार्य है।

आज हर जगह प्लास्टिक की बोतलों व गिलासों में बंद पानी को प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्लास्टिक की बोतलों व गिलासों पर कहीं भी कोई रोक–टोक नहीं। प्लास्टिक की बोतलों व गिलासों में बंद पानी के प्रयोग को प्रतिष्ठा का प्रतीक या स्टैंडर्ड माना जा रहा है। प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित *'यूज एण्ड थ्रो'* पात्रों को प्रतिष्ठित किया जा रहा है। एक–एक फंकशन में कई–कई टैंपों ट्रक भरकर प्लास्टिक की पानी की बोतलें व गिलास तथा प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित यूज एण्ड थ्रो पात्र प्रयोग में लाए जाते हैं फंकशन खत्म होते–होते इस घातक कचरे के ढेर लग जाते हैं। यह कचरा वज़न में अत्यंत हल्का होता है। अतः इधर–उधर उड़ता–फिरता रहता है।

शहरों, कस्बों, गाँवों व समस्त पृथ्वी के सौंदर्य पर कलंक–सा यह कचरा सचमुच त्याज्य है। आज बड़े–बड़े शहरों में ही नहीं कस्बों और गाँवों तक कूड़े का सही ढंग से निपटारा करना एक बड़ी समस्या हो गई है। कुछ आर्थिक व आद्योगिक विकास की आवश्यकता तथा कुछ बढ़ते बाज़ारवाद के कारण आज हमारे उपभोग की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है। वस्तुओं की संख्या और मात्रा दोनों में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही है। **'यूज़ एण्ड थ्रो'** संस्कृति के कारण तो स्थिति और भी भयावह होती जा रही है। बढ़ते औद्योगीकरण के कारण संसाधनों का अपरिमित दोहन किया जा रहा है जो हमारे परिवेश और प्राकृतिक संतुलन के लिए घातक है।

क्या प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित 'यूज एण्ड थ्रो' पात्रों की जगह धातु, चीनी मिट्टी अथवा काँच के सुंदर व टिकाऊ, खाने –पीने में सुविधाजनक बर्तनों का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता? क्या प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित यूज एण्ड थ्रो पात्रों की जगह प्राकृतिक सामग्री जैसे पत्तों से निर्मित पत्तल व दोनों का प्रयोग संभव नहीं? क्या पत्तों से निर्मित पत्तल व दोनों का प्रयोग परिवेश के लिए अनुकूल व सुरक्षित नहीं? क्या इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का सृजन संभव नहीं? क्या इससे अजैविक अथवा नष्ट न होने वाले कूड़े–कचरे के अंबार से मुक्ति संभव नहीं? कुछ भी असंभव नहीं यदि संतुलित दृष्टि व नेक इरादे से कार्य किया जाए।

क्या प्लास्टिक की बोतलों या गिलासों से बंद पानी की जगह टूटीवाले जगों या टंकियों में शुद्ध पेय जल उपलब्ध नहीं कराया जा सकता? कराया जा सकता है लेकिन दो सौ, तीन सौ हद से हद पाँच सौ रुपये के पानी के बीस –पच्चीस हज़ार रुपये तो नहीं बनाए जा सकते। ये घोर बाज़ारवाद, औद्योगीकरण व व्यवसायीकरण का परिणाम है जिसके कारण लगभग बिना कीमत वाला पानी जैसा पदार्थ भी न केवल सौ गुना से ज़्यादा कीमत पर बेचा जा रहा है अपितु पानी जैसे बेशकीमती पदार्थ की बर्बादी व प्रदूषण के स्तर में बेतहाश वृद्धि हो रही है और लोगों के स्वास्थ्य से भी खिलवाड़ किया जा रहा है।

कई बार शुद्ध स्वच्छ जल अथवा मिनरल वॉटर के नाम पर जो बोतलबंद पानी परोसा जाता है वास्तव में वह पीने योग्य नहीं होता। उसमें से न केवल दुर्गंध आती है अपितु कई बार खारापन अथवा स्वाद भी अजीब–सा होता है। शुद्ध स्वच्छ जल तो गंधहीन, रंगहीन व किसी भी प्रकार के स्वाद से रहित तथा पारदर्शी होता है। शुद्ध जल अथवा मिनरल वॉटर के नाम पर प्रायः बोतल में बंद पानी ही होता है जिसकी गुणवत्ता का कोई भरोसा नहीं। कई बार सीधे ज़मीन का कच्चा पानी जो पीना तो दूर अन्य प्रयोग के लिए भी उचित नहीं होता बोतलों में भर दिया जाता है।

कई बार बोतलबंद पानी इतना खराब होता है कि जो भी बोतल या गिलास खोलकर घूँट भरता है वह उसे गले से नीचे उतारने में असमर्थ होता है। वह न केवल भरी बोतल या गिलास डस्ट बिन में फैंकने को विवश होता है अपितु मुँह में लिए पानी को कुल्ला करके बाहर फैंकना भी उसके लिए जरूरी हो जाता है। यह न केवल लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ है अपितु अनैतिकता व साफ–साफ बेईमानी भी है। यह पानी का ही नहीं अन्य संसधनों का भी दुरुपयोग है और प्रकृति व पर्यावरण के प्रति लापरवाही ही नहीं, गंभीर अपराध भी है।

देश में ही नहीं पूरे विश्व में पर्यावरण की स्थिति लगातार बदतर होती जा रही है। ऐसे में हमारे लिए अपने उपभोग को सीमित व नियंत्रित करना ही नहीं अपने उपभोग की दशा व दिशा को बदलना भी अनिवार्य प्रतीत होता है। यह हर तरह से हमारे हित में ही होगा। वस्तुओं का सही व संतुलित प्रयोग ही नहीं पुनप्रयोग भी समय की मांग है। जल का विवेकपूर्ण उपयोग तो और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। जल व अन्य संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग में ही निहित है प्रकृति का बचाव और पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति। यह तभी संभव है जब हम अपने व्यवहार के साथ–साथ अपनी मानसिकता को बदलकर उसे भी अधिकाधिक संतुलित व सकारात्मक बनाएँ।

ए.डी. 106–सी, पीतम पुरा,
दिल्ली – 110034
फोन नं. 09555622323

☞ *पृष्ठ 7 का शेष*

ईश्वर –प्रणिधान

हमारे आत्मिक बल को इतना बढ़ा देता है कि सम्मुख आई घोरतम विपत्ति को भी व्यक्ति हंसते–हंसते सहन कर लेता है। विपत्तियों के पहाड़ ही क्यों न टूट पड़ें परन्तु विचलित नहीं होता। ईश्वर विश्वासी को किंचित् भी भय नहीं होता। ऐसी श्रद्धा व विश्वास विरले लोगों में होता है, इन विरले लोगों में ही वर्तमान काल में ऋषि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन ईश्वर–प्रणिधान से ही ओत–प्रोत था, ऐसा उन के जीवन चरित्र का स्वाध्याय करने से ज्ञात होता है। वे ईश्वर विश्वासी और सत्यवादी थे। उनके जीवन में कितनी बार कितने ही प्रलोभन आये, मगर वे कभी भी असत्य के पक्षधर नहीं बने। प्रभुभक्त होने के कारण उन में अद्भुत सहनशक्ति तथा निर्भीकता थी। वे हर क्रिया–कलाप में ईश्वर से ही आबद्ध रहते थे। ईश्वर में इतना दृढ़ विश्वास कि प्रत्येक कार्य ईश्वर की आज्ञा लेकर करना उनका स्वभाव बन गया था। जीवन की अंतिम वेला में मृत्यु द्वार पर दस्तक दे रही थी, ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना कर के मानों ईश्वर से देह त्यागने की आज्ञा ले रहे हों। आदेश मिलते ही अंतिम श्वास के साथ ईश्वर का धन्यवाद किया और मुख से शब्द निकले **'तेरी इच्छा पूर्ण हो '**। अकेले दयानन्द ने ईश्वर को अपना सुरक्षा कवच बना युग को चुनौती दी थी। **ऋषि दयानन्द जी व उनकी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश पूरे विश्व का प्रकाश स्तम्भ है। क्योंकि मार्गदर्शक वह है, जो सद्मार्ग जानता है, उस पर चलता है, और दूसरों को प्रेरित करता है, सही रास्ता दिखाता है।**

हे परमेश्वर ! मैं आप को किसी भी मूल्य पर न छोड़ूँ। आप की आज्ञाओं को भंग न करूं, सदा आपके अनुकूल प्रिय आचरण करते हुए आपका प्रिय भक्त बन जांऊ। ऐसी आप से प्रार्थना है।

786/8अर्बन एस्टेट, करनाल–132001
मो–09416801757

thearyasamaj.org

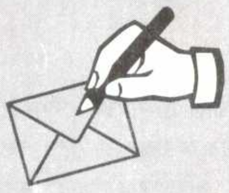

पत्र/कविता

शुद्धि का चक्र पुनः चले

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अलख धारी को शुद्ध कर आर्य बनाया, पंजाब में ईसाई मिशनरियों को कुचलने का पूरा प्रयास किया, उनके कार्य से अनेक हिन्दू ईसाई बनने से रुके यहां तक कि रेवरेन्ड भी उनके कार्य को देख घबरा गया था। शुद्धि का यही चक्र स्वामी श्रद्धानन्द ने चलाया और सहस्रों मलकाने राजपूतों को शुद्ध किया। आगरा में उन्होंने बृहत राजपूत सम्मेलन किया जिससे प्रभावित हो अनेक मुस्लिमों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया था।

पूरे भारत में शुद्धि की लहर चल रही थी मुसलमान स्वयं शुद्धि में भाग ले रहे थे तभी एक मुस्लिम महिला असगरी बेगम वहाँ शुद्धि हेतु आई उसे शुद्ध किया गया। असगरी वेगम के शुद्ध होने पर स्वामी श्रद्धानन्द के पास मुसलमानों के अनेक धमकी भरे पत्र आ रहे थे। उसी समय एक रशीद नामक मुस्लिम युवक वहां श्रद्धानन्द से मिलने आया और उसने रिवाल्वर निकाल कर स्वामी श्रद्धानन्द के ऊपर गोली दाग दी।

स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि चक्र से लाखों मुस्लिम युवक हिन्दू बन चुके थे उत्तर भारत में शुद्धि की आंधी चल रही थी।

यह आंधी स्वामी श्रद्धानन्द के बाद चलती रही पं. लेखराम, कुंवर सुख लाल, रामचन्द देहलवी, पं प्रकाश वीर शास्त्री जैसे अनेक आर्य क्रान्तिकारियों ने इस हेतु अपने आप को बलिदान कर दिया।

आज भी हमें शुद्धि कार्य को भुलाना नहीं चाहिए। वेद प्रचार कर, अन्ध विश्वासों का निराकरण कर मूर्ति पूजा जैसे अन्ध विश्वासों के प्रति जागृति लाकर और हिन्दुओं से मुसलमान बने अपनों को पुनः हिन्दुओं में मिला सकते हैं।

इस हेतु हमें क्रान्तिकारियों का इतिहास याद होना चाहिए। महमूद गज़नवी, गौरी, इल्तुतमिश, तैमूर, चंगेज खां जैसे लुटेरों ने जो रक्त बहाया उसके प्रति उनके कारनामे सुनाकर अपने से विछुड़ों को अवगत कराना चाहिए कि किस तरह उन्होंने उनकी मां बहनों के साथ अत्याचार अनाचार किए और उनको मुस्लिम बना दिया। आज के मुसलमान उन्हीं के वंशज हैं जो भूल गए कि उनके साथ क्या अत्याचार हुए थे। हमारे देश का इतिहास रक्त रंजित इतिहास है उसे भुलाना कठिन है उसका रास्ता केवल शुद्धि है जहां न तलवार है न गोली। आपसी सौहर्द का रास्ता है अतः शुद्धि कर चक्र आज भी चलना ही चाहिए।

डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह
मो. 8979794715

****

उठो वीर बलिदानी

आर्यसमाज से माँग रही, भारत माता कुर्बानी।
बलिदानी इतिहास रहा है, उठो वीर बलिदानी।।

पहले से भी अधिक ज़रूरत, आज तेरी हुँकारों की।
आवश्यकता पहले से भी, ज्यादा है उच्च विचारों की।
दयानन्द के सैनिक सा, दीखे न कोई सानी।।
बलिदानी....................

दुश्मन ने फिर स्वर्णभूमि पर, अपना पाँव पसारा।
देश के लोभी गद्दारों से, मिलता उसे सहारा।
पौरुष और पुरुषार्थ से है, उसकी बुनियाद हिलानी।।
बलिदानी ....

फैल चुका है पुनः चतुर्दिक्, देवासुर–संग्राम।
देशद्रोहियों को चुन–चुनकर, भेजो अब यमधाम।
बजरंगी बनकर पापों की, लंका पुनः जलानी।।
बलिदानी.....................

यहाँ अनेकों लेखराम तेरी गोदी में खेले।
मृत्यु का आलिंगन कर फांसी के फंदे झेले।
सीने पर गोली खाने, वाले, उठ जा सेनानी।
बलिदानी.....................

ओज तेज और यज्ञभाव, जिसकी नस–नस में डोला।
कदम–कदम पर स्वाभिमान का, झूला डाल हिण्डोला।
वेदों के आलोकित पथ से, निकली सजी जवानी।।
बलिदानी'...................

पं. संजय सत्यार्थी
09006166168

नागरी के प्रचार में विदेशियों का योगदान

भारत में ईस्ट कंपनी के राज स्थापना के पूर्व फारसी यहां की राजभाषा थी और फारसी लिपी में ही शासकीय पत्र–व्यवहार और अभिलेख लिखे जाते थे। इस बात पर कभी विचार नहीं किया गया कि जन साधारण की लिपि क्या है और शासकीय कार्य उस लिपि में होना चाहिय। लगभग उन्नीसवीं शती के प्रारंभ तक यूरोपीय जाति की दृष्टि में भी देवनारी लिपि का कोई विशेष महत्व नहीं था। वे या तो रोमन लिपि के पक्षपाती थे अथवा फारसी लिपि के। कुछ समय पश्चात् उन्होंने देवनारी लिपि की वैज्ञानिकता एवं विस्तृत व्यावहारिकता को पहचाना और इसे प्रतिष्ठित स्थान प्रदान करने के लिये प्रयत्न किया।

लिपियों के विशेषज्ञ विलियम कैरे ने न केवल देवनागरी के टाइप ढलवाकर मुद्रणालय की स्थापना की अपितु उत्तर भारत की अनेक भाषाओं में देवनागरी का उपयोग कर इस बात की ओर संकेत किया कि यह लिपि अधिकांश आधुनिक भाषाओं में लिए उपयुक्त है।

उन्नीसवीं शती में हिंदुस्तानी को कचहरी की भाषा और देवनागरी–लिपि के प्रयोग के लिए विदेशियों द्वारा श्लाघनीय प्रयत्न किये गये। इस प्रसंग में ईस्ट इंडिया कम्पनी के एक अंग्रेज़ सिविलियन फ्रेडिक जॉन शोरे का उल्लेख करना आवश्यक होगा। इस विद्वान ने अपनी पुस्तक में कहा कि कचहरी की भाषा हिन्दुस्तानी और लिपि देवनागरी होना चाहिये। शोरे महोदय ने समय से पूर्व नागरी लिपि को प्रश्रय देने की मांग की थी। इसके पश्चात् लगभग बीस वर्ष तक किसी ने भी इस विद्वान के कथन को विशेष महत्व नहीं दिया। हिंदुस्तानी को कचहरी की भाषा का स्थान दिलाने का श्रेय 'फैलन' और 'ग्राउन' को है।

1866 ई में कचहरी की भाषा हिन्दुस्तानी के रुप में और लिपि को लेकर बडा विवाद हुआ। कुछ लोग अरबी–फारसी के शब्दों से लदी हिन्दुस्तानी के पक्षपाती थे। ग्राउन ने देवनागरी लिपि का पक्ष लिया। उनका मत था कि फारसी लिपि की तुलना में नागरी लिपि अधिक स्पष्ट और नियमनिष्ठ है यद्यपि यह अपेक्षाकृत धीरे लिखी जाती है। रोमन लिपि कि तुलना में यह अधिक उपयोगी है। पश्चिमोत्तर प्रांत में हिंदुस्तानी को कचहरी की भाषा का सम्मान प्राप्त देने के बाद भी उसकी लिपि फारसी रखी गई थी। उस प्रांत में देवनागरी को सरकारी लिपि बनाने का श्रेय पश्मोित्तर प्रांत और अवध के गवर्नर एन्थोनी मैक्डानल्ड को है। जनवरी 1899 ई में उनकी घोषणा प्रकाश में आई। देवनागरी लिपि को सरकारी रूप में अपनाने की घोषणा कर उन्होंने भारत के एक बड़े वर्ग की इच्छाओं का सम्मान किया।

कोश ग्रंथो में देवनागरी लिपि का प्रयोगः कुछ साल तक विदेशी कोशकारों ने अपनी कृतियों में नागरी लिपि को कोई स्थान नहीं दिया। ये ग्रंथ अधिकांश रूप में रोमन लिपि में ही प्रकाशित होते थे। 1785 ई में क्रिकपैटिक ने एक शब्दकोश की रचना। उनकी इच्छा थी कि कोश में हिंदी के शब्द सम्मिलित किये जाएं और देवनागरी लिपि का प्रयोग हो। परन्तु उस समय तक नागरी के टाईप का अभाव था। ऐसे समय में गिलक्रिस्ट का आविर्भाव हुआ जो फारसी और देवनागरी के स्थान पर रोमन लिपि के पक्षपाती थे। 1824 इ में एच एच विलसन ने हिंदुस्तानी और फारसी मुहावरो के कोश की रचना की। यह ग्रंथ उन्होंने अपने मित्र गिलकिस्त को समर्पित किया है और प्रस्तावना में गिलकिस्ट की रोमन लिपि की नीति का विरोध किया है।

मोहन लाल मगो

****

☞ पृष्ठ 6 का शेष

नैसर्गिक न्याय का ....

वर्तमान आग्नेयास्त्र विज्ञानी पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का सम्प्रेरक सूत्र वाक्य है– ''**Power Comes from inside, you will be remembered for creating that page in thw History of the nation.**" 'शक्ति का स्रोत अन्तर्मन है, अपनी एक पृष्ठ की सर्चना से राष्ट्र के इतिहास में आप सर्वदा स्मरण किये जायेंगे।''

चलते–चलते इस धीर गम्भीर नैसर्गिक न्याय की राष्ट्र–कथा का मंगलमय प्रसाद तो लेते जाइये। प्रचीनकाल की बात है। काशी में ब्रह्मदत्त नाम के राजा राज्य करते थे। ब्रह्मदत्त विवेकशील शासक थे, जो सत्य–असत्य, उचित–अनुचित तथा न्याय–अन्याय का सदैव ध्यान रखते थे। वे ऐसे व्यक्ति की खोज में रहते थे जो दोषों को बता सके। प्रशंसा करने वाले तो सभी थे, दोष बताने वाला कोई नहीं था। राजा ने सोचा कि कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाये, जो उसकी न्यूनतायें बता सके। अस्तु, सर्वत्र घूमता हुआ, हिमालय प्रदेश के घने जंगलों एवं दुर्गम पर्वतों को पार करता हुआ वह महाप्रज्ञ बोधिसत्व के आश्रम में जा पहुँचा। राजा ने बोधिसत्व को प्रणाम किया। उन्होंने राजा का स्वागत किया, कुशल क्षेम पूंछा, और उन्हें जंगल के पके हुए फल खाने को दिए। राजा को फल बड़े मधुर व स्वादिष्ट लगे, उसने बोधिसत्व से पूंछा–भन्ते, क्या बात है ये फल बड़े मीठे, स्वादिष्ट व तृप्तिकारक हैं?

बोधिसत्व ने बताया – ''महापुण्य! राजा निश्चय से धर्मानुसार व न्याय पूर्वक राज करता है, इसी से ये फल उत्तम गुणवान हैं; राजा के अधार्मिक और अन्यायी होने पर तेल, मधु, शर्करा आदि तथा जंगल के फल सभी स्वादहीन व विषैले हो जाते हैं। यही नहीं सारा राष्ट्र ओज रहित हो जाता है। ''भन्ते, ऐसा होता होगा'' राजा अपना परिचय दिए बिना ही अपनी राजधानी लौट आया। उसने सोचा तपस्वी बोधिसत्व के कथन की पुष्टि करनी चाहिए। कुछ दिन अधर्म–अन्याय से राज करके देखता हूँ। उसने ऐसा ही किया और कुछ काल बाद फिर बोधिसत्व के आश्रम में जा पहुँचा। बोधिसत्व ने राजा को फिर पके जंगली फल खाने को दिए जो कड़वे लगे और उसने थूक दिए। इस पर बोधिसत्व ने कहा राजा अवश्य ही अन्यायी व अधार्मिक होगा, जो जंगल के फल–फूल व सभी वस्तुऐं नीरस व कड़वी हैं। राजा के और जिज्ञासा करने पर बोधिसत्व ने कहा कि गायों के नदी पार करते समय यदि बैल टेढा जाता है तो सभी गायें टेढ़ी जाती हैं। राजा अग्रणी नायक माना जाता है, यदि वही जब टेढ़े मार्ग पर चलने लगता है, तो ''यथा राजा तथा प्रजा'' सारे जन कुमार्ग पर चल पडते हैं। बोधिसत्व से यह शिक्षा प्राप्त कर ब्रह्मदत्त ने अपने राजा हाने का परिचय प्रकट कर दिया। मीठे फलों को कड़वे करने के अपराध को स्वीकार करते हुए उन्हें फिर से मधुर व स्वादिष्ट बनाये जाने के संकल्प की घोषणा कर दी। काश, यह कहानी आज के राजनेताओं को रास आ जाये, और वे अपने दुराचरण से राष्ट्र में फैलाये हुए अधर्म–अत्याचार को समेट कर फिर से राष्ट्र में सर्वोदय की लहर फैला सकें, तो काशिराज ब्रह्मदत्त की भांति उनकी भी सर्वत्र जय जयकारा हो सके।

आपको नहीं लगता कि आज भारत राष्ट्र में दूध, दही, घृत, मिष्ठान, फल सब्जी, औषधियाँ सभी अपमिश्रण व रसायन प्रयोग से विषाक्त हो रहे हैं। क्या इस कथानक की अंगुली सीधे शासन तन्त्र की ओर उठती दिखाई नहीं दे रही है? राष्ट्र को सकल समर्पण करके राष्ट्र को धारण करने वाले धृतराष्ट्र कहलाते हैं। जैसे सम्राट् धृतराष्ट्र पुत्रमोह वशात् अन्धे होकर राष्ट्र को मृतराष्ट्र बना देते हैं वैसे ही सुयोधन दुर्योधन बन जाते हैं। कौन नहीं जानता सड़ते हुए शव को गिद्ध–कुत्ते, कीड़े, मकोड़े नोच–नोच कर खाने लगते हैं। नैसर्गिक न्याय का पालन करके आइए हम भारत को फिर से विश्व का जीवन्त सिरमौर राष्ट्र बनायें।

रामघाट मार्ग,
अलीगढ़ – 202001 (उ.प्र.)

☞ पृष्ठ 8 का शेष

बाला साहब देशपाण्डे ...

स्वरूप दिया जाए। बाला साहब सर्वप्रथम उत्तरपूर्वांचल गए और कल्याए आश्रमों का विस्तार करने लगे। 1981 में दिल्ली में पहले अखिल भारतीय सम्मेलन में नागालैण्ड के विधायक एन.सी जेलियांग ने अध्यक्षता की थी जिन्होंने कहा था, "हम गैर–ईसाई हैं– आप भी गैर ईसाई हैं– एक गैर ईसाई फ्रन्ट बनना चाहिए।'' दिल्ली में उन्होंने यह भी कहा कि मुझे यहां आकर अनुभूति हो रही है कि मैं भी हिन्दू हूँ"

आदिवासियों को गैर–हिन्दू कह कर धर्मान्तरण करने का प्रयास मानवाधिकारों का निकृष्टतम हनन है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनको स्वयं निर्णयाधिकार देने की बात विश्व भर में चल रहीं हैं। पर कांग्रेस अथवा वामपंथी अभी भी धर्मान्तरण की अन्तर्राट्रीय लाबियों के दास हैं, यह एक विडम्बना है। 21 अप्रैल 1995 को उनका निधन हो गया और इसी बीते 2013 में उनकी जन्मशती मनाई गई थी।

हमारे देश में यह सर्वविदित है कि सेवा की आड़ में आपदाग्रस्त लोगों का ईसाईकरण, आतंकवाद एवं राष्ट्रद्रोह, एक सोची समझी साजिश द्वारा चर्च के अन्तर्गत कार्यरत संगठनों को "करुणा–केन्द्र", "प्रीति आश्रम", "क्राई टेन्डर", "लविंग होम", प्रेशस मोमेन्ट्स", "एक्शन फार सोशल डेवलपमेंट", "बड ब्लासम" आदि दिग्भ्रमित करने वाले आकर्षक नाम देने की साजिश की जा रही है जहां अनाथ बनाकर मतान्तरण या मासूम बच्चों का घृणित व आपत्तिजनक व्यापार भी किया जाता है। छोटे छोटे कस्बों या गांवो में भी ईसाई मिशनरियों के प्रचारक दत्तक लेने की सरकारी प्रक्रिया में अनेक घपले कर चुके हैं। यह हिन्दू आस्था का अपमान है। हम भूल नहीं सकते हैं कि 1982 में तमिलनाड के कन्याकुमारी जिले में हुए भीषण दंगों की जांच के लिए गढित न्यायमूर्ति वेणू गोपाल की अध्यक्षता वाले आयोग ने ईसाई पादरियों द्वारा किया जा रहे मतान्तरण को ही दंगों का मुख्य कारण कहा था। उन्होंने सुझाव भी दिया था कि मतान्तरण को प्रतिबंधित करने के लिए शीघ्र एक केन्द्रीय कानून बनाया जाए।

एक प्रश्न बार–बार उठाया गया है कि वनवासी क्षेत्रों में नक्सलवादी हिंसा की समस्या के पीछे किन तत्वों की आपत्तिजनक भूमिका रही है। हम कब तक सत्य से दूर भागते फिरेंगे? क्या देशवासियों ने कभी सोचा है कि स्वाभिमान जैसी भी कोई चीज होती है। आदिवासियों को हिंसा का मार्ग दिखाने वालों में नक्सल समर्थक डॉ. विनायक सेन भी थे और खुले आम कार्यरत सी. पी.आई (मार्क्स व लेनिनवादी) वामपंथी दल भी हैं जो मानते हैं कि बन्दूक की नली से ही सत्ता उत्पन्न होती है। पिछली केन्द्र सरकार, कांग्रेस प्रधानमंत्री व दल की अध्यक्षा, मानवाधिकार कार्यकर्ता सभी अत्यन्त प्रफुल्लित थे जब सर्वोच्च न्यायालय ने विनायक सेन को जमानत दे दी थी। यूरोपीय यूनियन व पश्चिमी ताकतों के हस्तक्षेप को कारण राष्ट्रद्रोह के मामले पर भी हमारी सरकार नतमस्तक ही नहीं हुई डॉ. सेन को सोनिया गांधी की परामर्शसमिति का चहेता सदस्य थी बना दिया। क्या हम भूल जाएंगे कि छत्तीसगढ उच्च न्यायालय ने विनायकसेन को देशद्रोह के मामले में उम्रक़ैद की सजा सुनाई थी क्योंकि उनके नक्सलवारियों से सम्बंध थे।

उपर्युक्त संदर्भ में बाला साहब देशपाण्डे के पिछले बासठ सालों से कार्यरत, वनवासी कल्याण आश्रम की सकारात्मक भूमिका व उपलब्धियों का महत्व भलीभाँति समझा जा सकता है। कार्य का क्षितिज विस्तृत है और स्वालम्बन के लिए विविध उपक्रमों व प्रकल्पों का तृणमूल स्तर पर संचालन एक बहुत बड़ा दायित्व है जिसे एक विशाल सामाजिक आन्दोलन की तरह निभाया जा रहा है।

यदि किसी ने 18 दिसम्बर 2013 की सरकार द्वारा प्रायोजित अल्पसंख्यक अधिकार दिवस के सैकड़ों पत्र पत्रिकाओं में पूरे पृष्ठों के विज्ञापनों को देखा है तब अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष, जम्मूकश्मीर सरकार के पूर्व मुख्य सचिव रहे वजाहत हबीबुल्ला द्वारा देश में और विशेषकर उड़ीसा में फिर साम्प्रदायिक तनाव की उनकी साजिश स्पष्ट दीखती है। अल्पसंख्यक मंत्रालय के 2013–14 के दौरान गिनाए गए कीर्तिमानों में भारत के एक और विभाजन के बीज छिपे हैं। आज उड़ीसा का कंधमाल जिला घर सुलग रहा है। सोनियागांधी ने ईसाई धर्म के प्रसार के लिए वहीं के राधाकान्त नामक व्यक्ति को राज्य सभा में भेजकर पुरस्कृत किया था। जॉन दयाल को अल्पसंख्यक आयोग के पुरस्कार का निर्णय करने वाले पैनल का सदस्य बनाया जिसने अपने ही एक साथी पादरी अजय कुमार सिंह का नाम अल्पसंयक पुरस्कार के लिए प्रस्तावित कर षड्यन्त्र रचाया था। वहाजत हबीबुल्ला भारतीय सेना को सदैव अल्पसंख्यकों के लिए खतरा कहकर भारतीय सेना का विशेषकर काश्मरी में राक्षसीकरण करते रहे हैं। कंधमाल का जनजतीय समाज स्वामी लक्ष्मणानंद की निर्मम हत्या के बाद भयभीत एवं स्तब्ध है और बालासाहब देशपाण्डे की भूमिका को दोहराने वालों की प्रतीक्षा कर रही हैं। यह प्रश्न उठता रहा है कि सोनिया गांधी की सरकार पर्दे के पीछे से आखिर भारत के मानचित्र में किस रंग को भरने की वामपंथियों से दुरभिसंधि करती रही है?

ए–1002 पंचशील हाइटस
महाबीर नगर
कान्दिवली (प) मुम्बई

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 04-05/6/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. हुड्डा पानीपत में महात्मा हंसराज जयन्ती पर हुई प्रतियोगिता

डी.ए.वी. स्कूल हुड्डा, पानीपत हरियाणा) के प्रांगण में महात्मा हंसराज की जयन्ती के अवसर पर महात्मा हंसराज–एक झलक' प्रतियोगिता में दस–दस बच्चों के समूह ने महात्मा जी की झलकियाँ प्रस्तुत कीं। प्रथम स्थान दयानन्द सदन ने और द्वितीय स्थान टैगोर सदन ने प्राप्त किया। संचित तूर (ग्यारहवीं कक्षा) ने अंग्रेजी भाषा में और शालिनी (बारहवीं कक्षा) ने हिन्दी भाषा के द्वारा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला। महात्मा हंसराज जी ने अध्यापक, प्राचार्य व समाज सेवा के द्वारा अपना पूरा जीवन सार्थक बनाया। उनके जीवन से ही प्रेरणा लेकर प्रभु से प्रार्थना करते हुए एक गीत 'हे नाथ अब तो एक दया कर जीवन निरर्थक होने न पाए' प्रस्तुत किया हिमांशी व मुस्कान ने। 'ऐसी कमाई कर लो जो संग जा सके' ये बोल गीत के थे हिमांशु दीवान के । गायत्री माता से अच्छी बुद्धि व शक्ति की मांग करते हुए मनीषा एवं उसके समूह के द्वारा एक नृत्य प्रस्तुत किया गया। अध्यापिका (धर्म शिक्षा) के द्वारा बच्चों को हंसराज जी के जीवन से अवगत कराया गया। प्राचार्या श्रीमती सरोज गर्ग जी के द्वारा महात्मा हंसराज जी के जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि उनका योगदान केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं था अपितु वे आर्य समाज से भी बहुत प्यार करते थे, उसे अपनी आत्मा मानते थे। उन्होंने बच्चों को महात्मा हंसराज जी को अनुकरण करने, शिक्षा के क्षेत्र, समाज सेवा व देश सेवा के लिए हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

जगन्नाथ जैन डी.ए.वी. गिदड़वाहा में हुआ यज्ञ

जे.एन. जै. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गिदड़वाहा के प्रांगण में महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस अत्यन्त हर्ष एवम् उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ से हुआ विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण वेद मन्त्रों एवम् वैदिक उद्घोषों से गूँज रहा था। देवयज्ञ के पश्चात् वैदिक भजनों का गायन हुआ जिससे श्रोता मन्त्र मुग्ध हो उठे।

इस सुअवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमति मोनिका खन्ना जी ने छात्र –छात्राओं को महात्मा हंसराज जी के जीवन–दर्शन, तप–त्याग, संघर्ष और महान् उपलब्धियों की जानकारी दी तथा उनके द्वारा दिखाये मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

बी.बी.के डी.ए.वी. में मातृ-दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया

स्कूल प्रांगण बी.बी.के.डी.ए.वी. स्कूल यासीन रोड में मातृ–दिवस अत्यन्त उत्साहपूर्वक एवं हर्षोल्लास से मनाया गया। स्कूल के प्रिंसरपल मैडम नीना बत्रा जी ने स्कूल के बच्चों व स्टाफ को मातृ दिवस की बधाई दी। उन्होंने बच्चों के समक्ष मां की महत्ता के बारे में एवं मां के जीवन में अपने बच्चों की परवरिश के लिए आने वाली कठिनादयों से बच्चों को अवगत करवाया। उन्होंने बच्चों को अपनी मां के चरण–स्पर्श करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रेरित भी किया। नर्सरी से आठवीं तक के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करके सबको अपनी प्रतिभा से मुग्ध एवं आश्चर्यचकित कर दिया। नन्हें मुन्ने बच्चों ने अपनी माताओं के प्रति अपनी भावनाएं नृत्य एवं

गीतों के माध्यम से प्रगट कीं। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने मां को समर्पित कविताएं भी पेश की। विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार के ग्रीटिंग कार्ड अपनी माताओं के लिए बनाकर अपनी कल्पना की उड़ान के रंग उनमें भरकर अत्यन्त प्रभावशाली तरीके से सबको प्रभावित कर दिया। रिज़नल डायरैक्टर श्रीमती नीलम कामरा जी ने भी बच्चों के साथ मातृ–दिवस के उपलक्ष्य में अपनी भावनाओं को मां के महत्त्व के ऊपर प्रकाश डाल कर व्यक्त किया। मैनेजर श्री के. एन. कौल जी ने भी कार्यक्रम में उपस्थित होकर बच्चों को जीवन में मां की सशक्त भूमिका के बारे में विस्तृत ढंग से अवगत करवाया।

प्रिंसीपल नीरा शर्मा जी ने भी इस सुअवसर पर बच्चों को हार्दिक बधाई के साथ आशीर्वाद दिया।

एसटी डीएवी सूरतगढ़ ने पंच कुण्डीय हवन-यज्ञ द्वारा की नए सत्र की शुरुआत

थर्मल कालोनी, सूरतगढ़ में स्थित एस.टी. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल ने आर्य युवा समाज के तत्वावधान में नए सत्र की शुरुआत हेतु पंच कुण्डीय हवन का आयोजन किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान् धर्मेन्द्र रावत जी ने इस अवसर पर थर्मल के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया। विद्यालय के अध्यक्ष व थर्मल के मुख्य अभियन्ता श्रीमान् एन. सी. गुप्ता जी और अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता श्रीमान आर. एस. मित्तल पत्नी सहित इस यज्ञ के प्रमुख यजमान बने। इस अवसर पर हवन मत्रों का उच्चारण करते हुए श्रद्वा व भक्ति के साथ यज्ञ कार्य प्रारम्भ किया, विद्यालय के समस्त प्राणी इस भक्ति भाव में रम गए और श्रद्वा का सैलाब उमड़ पड़ा। चारों तरफ वैदिक मत्रों की ध्वनि का नाद गूँज उठा। हवन कुण्डों पर बैठे सभी यजमानों ने प्रेम, श्रद्वा व विश्वास से घृत व हवन सामग्री की आहुतियाँ दी। थर्मल के मुख्य अभियन्ता श्रीमान् एन. सी. गुप्ता जी ने सभी कुण्डों पर विद्यमान यजमान स्वरुप गणमान्य व्यक्तियों, अध्यापकों व विद्यार्थियों पर पुष्प वर्षा करके उनकी मंगल कामना हेतु आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम की समाप्ति की गई।

मुद्रक व प्रकाशक – श्री प्रबोध महाजन, सभा मंत्री द्वारा मदन गोयल के प्रबंध में अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – श्री पूनम सूरी